१—सवय्ये

राम को नाम संभाल अरे मन, ऐसी बार बहुर* नहीं पावै ।
भूली दुनी, सुर, नर, मुनी, मुख राम कहै कुछ फल नहीं लावै ।।१
सब संयम आप बनाय रहो, छाजे बैठो सब न्याय चुकावै ।
भेद अभेद निरन्तर सूँ, गुरु पूरा मिले तब भेद बतावै ।।२
मनसा कूंजी हृदय सूँ लगै, गुरु-ज्ञान हरि नाम को जोर लगावै ।
खूटे कपाट न फेर लगे पट, लोक-तिहूँ जाकी दृष्टि में आवै ।।३
कुल कान तजी तज लोक लजी, वेद कतेब मनो बिसरावै ।
पानपदास विचार कहै, जब एसो भयो तब संत कहावै ।।४

२

चाख कहै सत को सतिया[1] , बिन चाख कहै लबार[2] सोई है ।
प्याज को गांठ में बांध रहो, कस्तूरी कहै मेरी गांठ बन्धी है ।।१
बिना खुले महकाय रही, सोई मस्त भया जाकू बास गई है ।
प्याज़ की गांठ को फोड़ देखो, बदबो उठी जो बेज़ार[3] भई है ।।२
कांच की पोत को डाल गले, सठमूढ़ कहै मुक्ता योही है ।
जाय पड़े कर जौहरी के, कीमत छिन मांहि निकाल करी है ।।३
कांच की पोत को डाल दियो, मुक्ता हरि नाम ले डबे भरी है ।
गाहक आवै जो सीस लिये, तिस के आगे ले खोल धरी है ।।४
चतुर विवेकी तो साधू वोही, सिर के बदले जो खरीद करी हैं ।
पानपदास तो आदि[4] कहैं, जगतै भगतै योही राड़ पड़ी है ।।५

*=बहुरि, पुन्नः १=सत् वक्ता, २=गप्पी, ३=परेशान, ४=पूर्व निश्चित

३

चलरे मनवा उस देस चलें, जहां काल-जिंजाल की झाल न व्यापै ।
भ्रम-पहाड़ से जाय बिलगाय[२] के, जाय लगे मन नाम के नाके ॥१
देह निरन्तर देव रहे, जाके देह नहीं सो तो आप ही आपे ।
चहुंटे माहि मुकाम कियो, कुछ भेद अभेद नहीं बपूराके[३] ॥२
संत अनन्त समाय रहै, दरस पाय रहै, गुन तीन न व्यापै ।
पानपदास तो विचार कहै, गुरु-शब्द लखे मनवा जब थाकै ॥३

राग बिलावल

गुरु परमेश्वर एको जान, गुरु मिल प्रभु की पड़ी पहचान ॥टेक॥
जन्म-जन्म कू तिमिर[४] मिटाया, तन में मन निर्मल दिखलाया ॥१
गुरु कृपासूं वह पद पाया, घट में आत्म प्रगट[८] लखाया ।२
गुरु की महिमा कही न जाई, गुरु परमेश्वर एको भाई ।३
भरमी-गुरु के निकट न जाई, आप बहैं[५] चेले दिये बहाई ।४
कहै पानप गुरु पे कुरबान, जिनसूं पाया साधो पद निर्वाण[६] ॥५

राग भैरव

सुन री सखी तू मोहि सुहाई, एसी सुमति कहां सूं लाई ।टेक।
सब जग करै भ्रम की सेवा, तू लख पायो आत्म-देवा ॥१
आत्म सेव सुरत सूं लाई, अटल सुहागन अवगति[१०]पाई ॥२
दर्शन माहि रही नित राची, जग की बुद्धि तजी सब काँचो ॥३
धन सतगुरु जिन दियो उपदेसा, पानप बसो अगम के देसा ॥४

२ = बिलग, ३ = दीन, बेचारा ४ = अन्धकार, ५ = भटके. ६ = मोक्ष. निश्चल
८ = प्रत्यक्ष, साक्षात्, १० = निश्चयात्मक-ज्ञान

राग गौरी

यो बाजी थिर नाहीं साधो, यो बाजी थिर नाहीं ।
दिन चार को आव-लगो-सा,[1] फिर आप आपको जाई ।टेक
रंग-रंग की पुतली आवें ताहि देख जग भूला ।
जाके बीच बाजीगर सांचा, कोई जाने सतगुरु का चेला ।१
निर्मल तीर्थ गुरु लखाया, पवन बांध जहां जाई ।
दिष्ट भर-भर चुभकी[2] मारे, सों तन निर्मल होई ।२
बाजीगर ने बाजी साजी, बाजी जगत भुलाया ।
कहै पानप सोई गुरु मेरा, जिन बाजीगर पाया ।३

राग बरवे

जो सतगुरु कृपा न करते, तो हम भी योंही बह मरते ।
हीरा जन्म अकारथ[3] जाता, पोथी पढ़-पढ़ राजी रहते ।टेक
यो जग बह्यो भ्रम-संग जात, गुरु दियो दीपक हमरे हाथ ।१
डारी तोड़ भ्रम की टाटी, सूझन लागी औघट-घाटी ।२
औघट-घाटी मनसा चढ़ी, यो मन बन्धा बिन रसरी[4] ।३
गुरु लखाया आतमराम, पानप परस[5] लह्यो विसराम ॥४

राग गूजरी

चिन्ता हरण मुरारी मेरो, चिन्ता हरण मुरारी ।टेक।
पांच स्वाद नहीं बस मेरे, तिनका बहु विसतार ।
जब बासा नैनन लखपाया, तब छीन[6] भएं विकार ॥१
आत्म सूं आत्म जब मिला, शीतल भए प्राण ।
कहै पानप गुरु भेद बताया, तापै मैं बलिहार ॥२

१=आव-लगाव, मेल मिलाप, २=डुबकी, ३=व्यर्थ, ४=डोरी ५=स्पर्श
६=क्षीण

राग भैरव

रैन तो गंवाई सोय, धंधे दिन खोया,

ज्ञान के नैन न खोल प्रभु को कब जोहया ॥ टेक ॥

जब ही टुक जाग पड़ा, हुक्का भर पीया।

बिसर गयो राम-नाम, धिक ऐसा जीया ॥१

पैदा कीन्हा याद–हेतु, सो सुपनै नाहि।

एको तत् नाम बिना, यम पे बांधा जाहि ॥२

आतम–तत् चीन्ह, कभी अकल कला लागै।

अकल के समाय, हंस ममता–जल त्यागै ॥३

गुरु–गम को पाय पाय, पानप जन गावै।

सहजै खूटें[1] कपाट[2], जोनि नहीं आवै ॥४

२

चेले कर भाई चेले कर, नरक न पड़ता तो नरक में पड़ ॥टेक॥

चेले गुरु मता नहीं पाया।

घट में हरि का दर्श गंवाया ॥१

दर्शन बिन जग अहला जाई।

चेले गुरु ठौर नहीं पाई ॥२

चेले का घर बसै अगाध[3]।

गुरु करता डोले बकवाद ॥३

सुरत गुरु और मन है चेला।

ताका सुपनै नाहि मेला ॥४

१ = खुले, उधेड़ना २ = किवाड़, आवरण ३ = अथाह, गहरा

सत गुरु मिले तो मरम बतावै ।

चेले गुरु का मेल मिलावै ॥५

सुर्त गगन चढ़ अगम बसेरा ।

मन सिमटे सहजै होय मेला ॥६

कहै पानप दर्शन अष्टोयाम ।

गुरु चेला मिल भयो विश्राम ॥७

३

हरि मेरो कौन रूप मेरी माई, जीव नरक दर्शन बिन जाई ।टेक

बिन दर्शन मोहि पल न सुहाई, सोईं सतगुरु जो देहू बताई ॥१

केते पढ़ें किताब कुराना, इन कौन सकल देखे रहमाना ॥२

केते पढ़ें भागवत और गीता, इन कौन रूप देखे हरि मीता[३] ॥३

रूप अरूपी संत दरसाई, घट-घट अन्तर रहो समाई ॥४

सुरत, निरत दोऊ सुन्न लव लावै, ब्रह्म अरूप सोई दर्शन पावै॥५

कहै पानप सोई गुरु मेरा, आठ पहर दर्शन को चेरा ॥६

राग पूर्वी

समझ रे अजहूँ[१] बार भली ।

रतन अमोलक आयु है तेरी, छिन-छिन जात चली ॥टेक॥

सुरत तलास कियो ना कबहूँ, डोले टली-टली ।

सतगुरु बिना न पावे कोई, निकट हैं प्रेम गली ॥१

अगम अगोचर देखो सोचर, जहां मुख-मुन्द कली ।

गुरु-गम पावे तो खिल आवें, अकल लगाय खिली ॥२

जहां के मध्य तीन-लोक फल, जो खोजे सोई पावै ।

कहै पानप वहां परम-पुरुष हैं, परसत[२] भय नहीं आवै ॥३

१=अब; २=छूना या स्पर्श ३=मीत स्नेही ।

२

रहना नहीं यहां तेरो ।

रहना नहीं यहां तेरो, तू पैर पड़ा है पसार ॥टेक॥
जा सुपने को तू देख लुभाया, तेरी यह सोभा दिन चार ।
मानुष-जन्म को लाहा[३] जो चाहे, तो कर गुरु शब्द विचार ।१
अकल-कला गह आत्म खोजे, तो पावै वस्तु अपार ।
अजहूं समझ मेरे मन भोंदू,[४] पानप कहत विचार ॥२

३

चितवो दर्श हरि ।

तनिक कोई चितवो दर्श हरि, दर्श हरि मूरत रहत खड़ी ।टेक।
आत्म दर्शन घट-घट प्रगट, जोई चितवे ताकी दिष्ट भरी ।
प्रगट दरसन ना परतीता, दुनिया बन-बन भटक मरी ॥१
कोई जन चित-चेतन होय जागा, अकल अगोचर बांध धरी ।
कहै पानप वोह पंथ अगोचर, सतगुरु मिल खबर पड़ी ॥२

३ =लाभ, ४=मूर्ख

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी ।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ॥
नमोः संत सतगुरु जिन्हों तत्व बीन्हा ।
नमोः दास पानप जिन्हों तत्व चीन्हा ॥
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फल पायंतं ।
गुरु के चरणारविंदं नमस्कारं-नमस्कारं ॥

इति, ब्रह्म विद्या चतुर्थ बाणी ।

॥ ॐ ॥

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

-॥- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -॥-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या पंचम बाणी

❀ सत्‌संग ❀

मनुष्य योनी सौभाग्य से मिलती है केवल इसी योनी में जीव अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके आवागमन से मुक्ति पा सकता है इस अमूल्य रत्न योनी को संसार के तुच्छ भागों में व्यर्थ खोना जीवन की सबसे बड़ी भूल है। गया समय फिर लौटता नहीं, 'पछताय क्या होत हैं जब चिड़या चुग गई खेत' जब यम आदबाता है फिर कुछ नहीं बन पड़ता अतः मनुष्य जीवन को सारभूत बनाने के लिए सतसंग में लगना चाहिए जिसको आदि अन्त की साख कहा है और जिसके द्वारा सर्व निवासी जो अति निकट होने पर भी दीख नहीं पड़ते हैं सुलभता से प्राप्त हो जाते हैं।

ब्रह्म पहिचाना गुरुमुखी, जाके पूर्ण भाग।
मती उपजी सत संगते, दियो भ्रम सब त्याग॥

सत् पुरुषों व सत शास्त्रों का संग ही सत्-संग कहलाता है। सत पुरुष वह हैं जो गुण रहित हैं और द्वन्द से ऊपर उठ कर सत् को प्राप्त कर लेते हैं इनकी गति का गान श्री पानपदास इस प्रकार करते हैं:—

जग में बड़ी संत की महिमा, नाम रतैं, करैं न करमा।
उन मुनि दसा उदासी रहैं, अनभव बानी मुखसूं कहैं॥१
मन थीर किया पलक नहीं चलै, हरि बरजों ते छिन नहीं टलै।
स्वांस स्वांस चलत है छीना, दर्शन सहित थकित नित कीना॥२
पागी प्रेम पलक नहीं लागे, निसबासर सोवै न जागै।
ऐसा संत मिले जो कोई, भागे भ्रम, पूर्ण मति होई॥३

यह संत जन सबसे निःस्वार्थ प्रेम करते हैं और दयालु होते हैं जो जन के दुखों से आप दुख मानते हैं शील इनका आभूषण है सन्तोष भोजन है इनके सब कर्म ममता रहित होते हैं और यह सदैव परमात्मा में लीन रहते हैं।

"संत बड़े तेरे दरबारी, तिन में पांव प्रभु खबर तुम्हारी"

इनकी संगत से मान, मद, मोह, क्रोधादि नष्ट हो जाते हैं भ्रम सब मिट जाते हैं, बुद्धि शुद्ध हो जाती है, विचार पवित्र व विशाल बनते हैं। हृदय में शान्ति, दया, क्षमा, अभय धैर्य, व आनन्द का प्रादुर्भाव होता है मनुष्य की मति जो पत्थर के समान है इन संतों के उपदेश से भीज जाती है और भगवत-नाम का रंग चढ़ जाता है। तब भगवान की दया का पता पड़ता है और भजन का मर्म समझ में आता है।

इन महान पुरुषों के विचार, वाणी व लेख ही शास्त्र हैं जिनकी विशेषता यह है कि यह सबको, सदा सुलभ हैं सब इनके अधिकारी हैं। शास्त्रों को श्रद्धा सहित सुनना, पाठ करना, समझना और इनके भावानुसार जीवन को बनाना आत्मुत्थान के लिए अति आवश्यक है। इनके पाठ से जीव को विश्राम मिलता है। "मति, कीरति, गति, भूति, भलाई" यह सब सत-संग के प्रभाव से मिलती हैं।

संगत सत् से होय फल, जिन किन संगत कीन।
कीट से भृंगी भया, कह पानप लौलनि॥

शब्दी

आदि–अन्त की साख[1] योह, कर लीजो सतसंग।
संत मिलै पानप कहै, तब लागे नाम सूं रंग॥ १
सर्व–निवासी रहें निकट ही, आपा रहे लुकाय।
कहै पानप सतसंग मिले, जब कुछ जानी जाय॥ २
मन में धुन लागी रहे, तिन की संगत कीजे।
कहै पानप पत्थर मत मेरी, सत्संग मिले तो भीजे॥ ३
उनकी संगत कीजिये, तन मन स्थिर होय।
आप तरें पानप कहै, और तिरावें सोय॥ ४
संगत सत से होय फल, जिन किन संगन कीन।
कीट से भृङ्ग[2] भया, कहै पानप लौ[3]–लीन॥ ५
खेंच सुरत जो मन में लावैं, सोजन हरिका दर्शन पावैं।
दर्शन किये होय मन थीरा, ता संगत थिर होय सरीरा॥ ६
सतसंग लाग भ्रम सूँ छूटे, सोध सुरत गेह लेह।
ताको मन्है मिलावे पानप, साहब दर्शन देह॥ ७
सोई देखे पानपा, जाही लागा सतसंग।
और कोई देखे नहीं, यो दुनिया मति भंग॥ ८
मन में सुमिरण ना करे, मुख सू करै बकवाद।
पानप कहै सुनो भाई साधो, उनकी संगत त्याग॥ ९
जा संगत सूं सोय पलटे, वह संगत कुछ और।
ए सब संसारी-संगत पानपा, यम नहीं छोड़े कोय॥ १०
बिन सत-संग बुद्धि कैसे उपजे, जो देखे ताहि लागे।
तत् वस्तु हरजन बतलावें, तासों यो जीव भागे॥ ११
संत मिले हरि मारग पावे, सत संगी भ्रम निकट न आवे।
संत संग से सब जग सूझै, होय सत संगी भ्रम न पूजै॥ १२

—:०:—

१=युक्ति, २=भ्रमर, भंवरा=भृंगी, ३=लो=लव, ५=प्रणाली, रीति

कड़के

संत पावै कोई संत पावै, एजी अर्थं अनुभव कोइ संत पावै ।
सच्चा हरि-नाम प्रतीत नहीं ताकी, भ्रम में सब ही संसार गावै ॥१
सत की चाल गहो उलट चढ़ गगन को, गगन में अलख अरूप राया[1]।
समेट कर पवन जब सूर ससि गेह लिए, भया युक्त-बंध तब दर्श पाया ॥२
नैन सू नैन मिल निरत[2] लागा रहै, निरत के निकट स्थिर थाना।
उलट कर दृष्टि जब पछम को देखया, आत्मा रूप बिरले पहिचाना ॥३
श्रवण सूं श्रवण मिल शब्द-धुन उपजे, सुनत ही जन्म और मरण नासै।
पवन गई धोय सहज निर्मल भया, निर्मली ज्योति मस्तक प्रकासै ॥४
हंस सूँ हंस मिल केलि[3] करें, केली कर ममत को नीर त्यागै ।
दास पानप कहै हंस मुक्ता चुगें, सरोवरमान के तीर लागै ॥५

—:)o(:—

झूलने

मेरा लाल अमोलक[4] अंतरयामी, रहा सब ही घट में छाय भी तो ।
व्याकुल सोवे जो लाख सहेलियों में, वह तो सोती को लेह जगाय भी तो।१
बूझ सूझ सतगुरु महरम कीता, दीना भक्ति को भेद बताय भी तो ।
पाचों तार कच्चे किये इकट्ठे ही, दीनी सुन्न में कमन्द[7] लगाय भीतो ।२
चढ़ै स्वर्ग-द्वारे गुन तीन तजै, रहैं चोथे सूं ध्यान लगाय भी तो ।
उलटे तेज द्वादस भया उजियारा, गया सब अंधेरा नसाय[5] भी तो ॥३
आगे कग होते अब हंस हुए, बसै मानसरोवर जाय भी तो ।
पानपदास सतगुरु प्रताप कहैं, चौड़े बैठा मुक्ति-फल खाय भी तो ॥

१=राजा, ४=अनोखा २=अनुरक्त, तत्त पर, ३=क्रीड़ा, सुख-शयन, ५=नाश,
७=कमंद=रस्सी

राग बिलावल

हरि को संत प्यारो लागे, संत-संगी हरि तजे न कबहूँ, बोले आगे-आगे ।टेक

खिदमतगार संत को आपे, पल-पल में सुध लेई ।

जन के दुखी आप दुख पावैं, जन को दुख न देई ॥१

हरि की बांधी संत छुटावैं, संत बंधी ना छूटे ।

सुर नर मुनी माया ने खाय, कोई छुट गए संत अनूठे ॥२

हरि बिसरे पल में मर जाऊँ, पल-पल हरि की याद ।

सतगुरु शब्द विवेक विचारा, पायो आत्म-रूप अगाद ॥३

कहै पानप दासन को दासा, दूजी चित न लाऊं ।

सतगुरु त्रिकुटी, चर्ण लखाये, तहां कू सुरत चढ़ाऊं ॥४

२

राम रटन लागी रहे, सोई संत सयाना ।

पाचों को प्रबोध[५] के, करे गगन पयाना[१] ॥टेक॥

एक पलक बिसरे नहीं, आत्म की याद ।

सकल निरन्तर सर्व में, वो वस्तु अगाध[२] ॥ १

आत्म सेव अकल सूँ, होय तन्त[३] झंकार ।

सोई जीवन संत की, तासू प्राण अधार ॥ २

मूल कंवल में पेठ के, मन धुन लवलावैं ।

ब्रह्म अरूपी दर्श के, हरजन सुख पावै ॥ ३

जिन अनभय[४] -पद परसया, ताका भय भाजा ।

कहै पानप ब्रह्म ज्ञानी, सो सबका राजा ॥ ४

५ = सतर्क, १ = गमन, २ = अथाह, ३ = बाजा, ४ = भयरहित ।

राग रामकली

गांऊगो गुण गांऊंगो, सुमर[1] सुमर गुन गांऊगो ।
जो कोई जीव भ्रम सूं छूटे, हरि यश गाय सुनाऊँगो ।।टेक
पांच पचीसो पवन बांध के, अधर में अधर झुलाऊंगो ।
आतमराम निरन्तर सेवा, मैं अनहद-बीन बजाऊंगो ।१
मानसरोवर मोती हंसा, हंस सूँ हंस मिलाऊंगो ।
मिलके हंस एक भए जब, ममता नीर बहाऊँगो ।२
चौड़े माहि ब्रह्म की भाटी, पवन को झोक लगाऊंगो ।
टपके अमी पीऊँ निस-बासर, देह विकार मिटाऊंगो ।३
तीर्थ जाऊं न नीर झकोरूं, झूटी प्रतीत न लाऊंगो ।
गंग जमन बिच मिली सरस्वती, मैं घट ही भीतर नहाऊंगो ।४
कहै पानप मिल साधु संगत, तब जुगत भक्ति की पाऊँगो ।
सांची भक्ति करूं मनसांसू, मैं बहुर न भवजल आऊंगो ।५

राग सारंग

संत समागम दीजे मोही, तिन में प्रभु पाऊँ मैं तोही ।।टेक।।
संत बड़े तेरे दरबारी, तिन में पाऊँ प्रभु खबर तुम्हारी ।१
तापर ते जन होंय दयाला, चरण दिखाये देत ततूकाला ।।२
संत मिलें तो हरि रंग लागै, संत मिलें तो सब भ्रम भागै ।।३
संत चरण की कर मोहि धूरी, कहै पानप पाऊँ मति पूरी ।।४

१=सुमरण

२

हरि सुमरन सूं भौजल तिरे, विघ्न अनेक विनासै छिन में ।
जो हरिजन कभी चित धरे ॥टेक॥
मीन चढ़ी सुमेर पुकारे, ससा[1] समुद्र में घर करे ।१
अचरज की कुछ कही न जाई, शिष्य के गुरु पायन[2] पड़े ॥२
प्रघट पाय सुमरन को परचा, जन पानप स्तुति करे ॥३

नाम लीला

दोहा—भक्ति अगोचर जगत सूं, बिन पाय सतसंग ।
सत मिले बड़ भाग सूं, तब लागै नाम सूं रगं ॥१

ऐसा सत कौन विधि पावै, भेष साधु कहै-कहै बौरावै ।
हरि के जन तिनकी गति न्यारी, सूर पूरबला पावै संस्कारी ॥१
जग में बड़ी संत की महिमा, नाम रते करे न करमा ।
उन मुनि दसा उदासी रहै, अनुभव बानी मुखसूं कहै ॥२
मन थीर किया पलक नही चले, हरि चर्णों ते छिन नहीं टले ।
स्वांस-स्वांस चलत है छीना, दरसन सहित थकित तिन कीना ॥३
पागी प्रेम पलक नहीं लागै, निसवासर सोवै न जागै ।
ऐसा संत मिले जो कोई, भागे भ्रम पूर्ण मति होई ॥४
पहले चिन्ह ऐसा लख लीजे, ता हरजन की सेवा कीजे ।
नयन बहै नीर की धारा, घट में निरखै तत् अपारा ॥५
दोहा—वह सरकारी संत हैं, और सकल संसार ।
कहै पानप जग का मता तजो, इनका संग निवारि[3] ॥

१=खरगोस, २=पेर, ३=त्याग

इति, ब्रह्म विद्या पंचम बाणी ।

* ॐ *

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

-॥- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -॥-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या षष्ट बाणी

❁ नाम-महिमा ❁

संत, ऋषि व महात्मा सब ने नामोपसना का महत्व गाया है। संतों की बानी में राम नाम को संजीवन बूटी कहा है। पानपदास जी के लिए राम नाम जीवन का आधार है; सर्व व्याधि नाशक है और भगवत प्राप्ति की सीढ़ी है:—

राम नाम पूंजी तेरी, हृदय राख परोय।
राम नाम हृदय धरै पानप, तब हरि का दरसन होय॥

हरि भक्त संसार में नामके भरोसे विचरते हैं, उनको मोह माया नहीं व्यापते। संसार माया के फंदे में फँसा है। संत नाम-द्वारा इस माया को खूँदते हैं और अपनी चेरी बनाते हैं। मन अति चंचल, मस्त और अपरबल है यह दुःसाध्य है केवल राम नाम से वश में आता है:—

"यो मन मरै नाम के जोरे, जो सुरत रटन को लागै"

नाम संसार—सागर में एक नौका है जिसको सुरतरूपी बांस से खेकर जीव पार उतरता है। राम नाम को जिह्वा से जपना और मन व चित्त को डाँवाडोल बहते रहने देना व्यर्थ का कष्ट है। नाम-जाप के लिए चित्त की एकाग्रता चाहिए:—

अन्तर अक्षर नहीं लागै, मुख राम कहै मुक्ति-फल चाहै।
मन मनसा चहुँ दिस फिरै, गुरु-ज्ञान बिना छिन नहीं ठहरै॥

गुरु-दीक्षा में लिया हुआ यह नाम-मन्त्र, ध्यान व प्रेम से सुरत द्वारा सुमरन करनेसे, अन्तरमें मधुर-स्वर से गूंजता है और उपासक मोहक व मृदु नाद में तल्लीन हो जाता है:—

"धुन उपजी सुरत सूं मन खोजा, धुन में रहा समाई।
वह धुन लागी बहुत प्यारी, पलक न बिसरी जाई॥

तब जीव निज स्वरूपका साक्षात्कार करके असीम संतोष व शान्ति पाता है और आत्मा में रमण करता हुआ मग्न रहता है।

शब्दी

राम नाम हृदय नहीं, तो काम क्रोध, बलबंड[२] ।
राम नाम हृदय धरै पानप, तो सब विकार के खंड ॥१
नाम ही सांचा नाम ही सूंचा, नाम लगे तो जग सूं ऊंचा ।
नाम बिना जग नर्क को जाय, कहै पानप हरजन रहै चरन समाय ॥२
नाम बिना निर्मल नहीं, जो कोटिक तीरथ नहाय ।
कहै पानप थिर नहीं सुरत मन, जन्म अकारथ जाय ॥३
नाम भरोसे हरजन खेलें, हर चरणों में सिर मेलें ।
हरजन माया ते नहीं डरें, करन-हार चाहे सो करें ॥४
अपनी करनी की नहीं आसा, भावें नरक देहो प्रभु बासा ।
नाम हृदय से नाहीं बिसारूं, नाम हरावै तैसे हारूं ॥५

झूलने

तेरी मुक्ति होवे हरि-नाम ही सूं, दूजा नाहीं तो आन उपाय है रे ।
संयम साँईं सदा तेरे संग रहे, अब मत चूक भला दाव है रे ॥१
हृदय खोज अकल समाव कर, प्रगटै जहां प्रेम सुभाव है रे ।
जिसका तो दरस परस होवे, दुरमत सब मिट जाय है रे ॥२
हिन्दू दौड़ अट्टसट्ट[१] भटक मुआ अड़सठ तीरथ घर माहि है रे ।
गंगा जमुना और सरस्वती ही, तीनों धार बही नित जाय हैं रे ॥३
संत जन कहै तो विचार ही के, मूरख भरमाया मानता नाय है रे ।
मुसलमान मक्केकू तो चल जावे, छाड़ा मन मक्का घर माहि है रे ॥४
गुरु पूरा मिले तन मन ही का, भिन-भिन कर भेद बतावै है रे ।
पानपदास कहते बिरला संतजन, सबद डोरी लगा चढ़ जाये है रे ॥५

१ = निरर्थक २ = बलवान

नाम लीला

उचरूं सत्य नाम की बानी, बिरला हरजन पावै ।
जाको लगन लगी मन माहि, युक्ता युक्ति बनावै ॥१
पहिले अष्ट कवंल को बांधे, अमरी संग गह लावै ।
निरत लगाय नाभि को सोधे, पवना अगम बसावै ॥२
ससि[3] और सूर दोऊ सम राखे, तब घट में दरसन पावै ।
घट देखा जिन सब जग देखा, यह जगत निकट नही आवै ॥३
परगटि[4] जोति तेल बिन बाती, अचरज कहा न जाई ।
पानपदास नाम की महमा, गुरु-गम से पाई ॥४

दोहा— घर में रतन अमोल है, पानप कहै विचार ।
　　बिन सतगुरु पावै नहीं, यह जगत रहा सिर मार ॥१

नाम प्रताप बड़ा रे भाई, ताको झाल[6] न व्यापै काई ।
नाम प्रताप कुछ नही व्यापे, हरजन तजै पुन और पापे ॥५
जैसे अग्नि प्रचन्ड बन माहि, आला सूखा दे जराई ।
ऐसे नाम हृदय जन धरै, तन विकार ताहि के हरै ।६

दोहा:—कहै पानप नाम प्रचन्ड है, जो कोई हृदय बसवै ।
　　माया मोह जाल नहीं व्यापे, तो हर घर ही में पावै ॥२

१—ज्ञान-सुखमनी

सत् सुकृत का गहिये संग, सच्चा लगै नाम सूं रंग ।
साधु धरै सुन्न में ध्यान, निर्मल उपजै ब्रह्म-ज्ञान ।
धर-धर ध्यान ब्रह्म को देखे, दरसै ब्रह्म कर्म सब मेटे ।
हरजन ऐसी युगत उपावै, कहै पानप भवजल नही आवै ।

३=चन्द्रमा, ४=प्रकटि ६=तीखापन ।

दोहा:—राम नाम तरन तारन, कलि में बड़ो जहाज ।
कहै पानप आत्म कला भर, जिन कियो पार को साज ।।१
राम नाम तारन तरन, ताहि न ढूंढे सगरी दुनिया ।
कहै पानप इन संग बिसारो, लखै न हंसा मुनिया[1] ।।२
राम नाम सरजीव[2] सहारा, ररंकार जिन किया अहारा[3] ।
निसदिन[4] रहै मग्न मन माहि, अनुभव बानी भाखै ताहि ।।३
वह हरजन कहुं ढूंढा पाईयो, चरन सेव जाकी करने जाईयो ।
जिनकी संगति तिमिर नसावै, कहै पानप ताहि अमरफल पावै ।।
दोहा:—कहै पानप नाम प्रचण्ड है, जो कोई धारै हृदय माहि ।
चार वर्ण और तीन लोक से, ऊंचे दे चढ़ाहि ।। १
कहै पानप नाम प्रचंड है, धरा सबके सीस ।
सुरत विचारे दसवें द्वारे, तब पावं जगदीस ।।२
सतलोक सतगुरु से पावै, मनसा[5] धर मन सेव लावै ।
मनसा फंदि बिना फंसाय, अधर अलग[6] में रही ठहराय ।।
अन्तर तूती बाजन लागी, सुनके धुनी ताके रंग पागी ।
पानप कहै संत होय ऐसा, भव से पार मिटे यम त्रासा ।।
दोहा:—दीखे नाहि नाम का लोभी, गृह लोभी संसारा ।
पानप कहै सुनो भाई साधो, तहां नहीं संग हमारा ।।१
संग तजो संसार को, हरि हृदय में धारो ।
कहै पानप हरि दरसन हुआ, आवागमन निवारो ।।२
सांचे संत नाम के नाती, यह संसारी अहला जाती ।
हरजन सुरत नाम सूं राती, थीर भई जो होती घाती ।।
घाती मन सब काया माहि, भ्रम पड़ा जग जाने नाहि ।
वह मनवा सोई प्रगट रहै, गुरु गम पाव पानप जन लहै ।।
दोहा:—अहुमनी दोऊ डार दे, तजकर मान गुमान ।
कहै पानप आत्म खोजले, तोहि तुरत मिले भगवान ।।१

१=लाल नामक पक्षी २=सजीव ३=आहार ४=दिन रात ५=बुद्धि ६=सुरक्षित

१—राग-भैरों

पायो हरि नाम सजीवन बूंटी, व्याधा सकल सूंघतै छूटी ।टेक
पांच तंत का कुतक बनाया, मन कूंडे में जतन कर घोटी ॥१
छन्ना ज्ञान निरत कर छानी, छनत ही भई बारहबानी[5] ॥२
भर-भर दिष्ट रैन दिन पिया, पीवत तासू गगन घर किया ॥३
काम, क्रोध, मद, लोभ, बिलाना[6], सतगुरु शब्द गेह पहिचाना ॥४
कहै पानप सबके आगे धरी, अंधरा जगत नज़र नहीं करी ॥५

२

और उद्यम तोय ना करना, हर-हर धुन हृदय धरना ।
हर-हर धुन सूं यो फल लागै, भवसागर नहचै तिरना ॥टेक॥
हर-हर धुन जो मनसा करे, भ्रम साथ नहीं बहना ।
मुख जिभ्या को काम नहीं है, बिन जिभ्या हर-हर कहना ॥१
वास-विहून वासा कीजे, लोक वेद सूँ न डरना ।
अगम अगोचर अकल-कला धर, गुरु-गम पाय अभर[1] भरना ॥२
यो अकरन करे सोई जन सूरा, जग में नाहीं उलझ मरना ।
कहै पानप भवसागर तिरबो, हरिकू नाम नहीं बिसरना ॥३

सवैया

ऐसे हेत लाव सच्चे नाम ही सूं, जैसे कूँज सेवे अंडे अपने ही ।
उड़ जाय तो कोस हजार चुगने, उसकी सुरत सहित बच्चे उपने[2] ही ॥
चढ़े बांस बरतकू[3] बांध ही के, हरदम साधे जैसे नटनी ही ।
लोग देख तमासे को सोर करें, उसकी सुरत्त नहीं कहीं कम्पन ही ।२
पांचों तन्तों को बांध हृदय जो धरे, विष त्यागेगी सर्पिणी ही ।
पानपदास लगाय[4] अजब देखा, जहां दान, न पुन्य अपंसा ही ॥३

१=जो उठाया न जा सके २=उत्पन्न, ३=रस्सी, ४=प्रेम, लगन, ५=स्वच्छ
६=नष्ट करना ।

१—राग नट

सांच बिना सुख नाहीं भाई साधो, सांच बिना सुख नाहीं ।।टेक
सांची कहूं ना मानै कोई, मिथ्या सूं सिर मारै ।
भवजल माहि जिहाज नाम बिन, कहो कौन-कौन पार उतारै ।।१
सांची संत विचार कहत हैं, बिरला चित्त बसावै ।
चन्दा सूर इक कर राखै, तो अलख पुरुष दरसावै ।।२
सांची मूरत लाय मन राखै, पल एक थिर ठहराई ।
सहजै प्रगटै उजियारी, तिमर सब नस जाई ।।३
एक भवन जाके दस दरवाजे, ना वे खुले सोई छारा ।
नौखंड खोज दसों दिस खेले, सोई गुरु हमारा ।।४
सुन्न सरोवर निर्मल तीरथ, नहाय सो उज्जल होई ।
सेवा पूजा सनमुख आत्म, और न दूजा कोई ।।५
शब्द हमारा न पहचाने, भ्रम में जन्म गवांवै ।
कहै पानप बिन शब्द गुरु के, जन्म-जन्म दुख पावै ।।६

२

हार पड़े हरिद्वारे, अब हम हार पड़े हरिद्वारे ।
जाकू लाग जिहाज ताहि को, सोई पार उतारे ।।टेक।।
जैसे अंध लकड़या गेह के, ताहि की सुध विचारे ।
ताकी सुध न ठोकर लागै, ऐसे हरि-नाम हमारे ।।१
अगम अगोचर ठांव बताई गुरु, जहां चढ़ नाम उचारै ।
वा थल थीर अचल भयो मन, अकल टरत न टारै ।।२
जाकू ढूंढ़त बहु जुग बीते, सो प्रभु नाहीं न्यारे ।
कहै पानप सुनयो भाई साधो, मैं सतगुरु के बलिहारे ।।३

राग बिलावल

नाम बिना दुख भारी तू पावैगो, हरि नाम बिना दुख भारी ।।टेक
दांव बनो हरि नाम सुमरले, मान तू सीख हमारी ।।१
जिस काया को तू अपनी कर जानें, सो भी न होत तुम्हारी ।।२
जिस दुनियां को तू देख लुभाया, अंत-काल होय न्यारी ।।३
जे नर हार चले इस जग तें, हृदय सूँ याद बिसारी ।।४
तामस मारे तन मन खोजे, ते जन हर सरकारी ।।५
कहै पानप जिन सर्व सुख लूटा, पल-पल सुरत सिंभारी ।।६

राग पूरबी

नाम बिना हरि-नाम बिना, कैसे जीऊँ मेरी माई हरि-नाम बिना ।।टेक
जैसे मीन जलसूँ बिछड़े, तड़फ-तड़फ सहजै मर जाई ।।१
पल बिसरेसूँ यो गत मेरी, जैसे जुआ हार जुआरी पछताई ।।२
जब निरखूँ तब ही सुख पाऊँ, जैसे निरखत चन्द चकोर सिहाई[1] ।।३
संतों ने परमारथ कीना, नाम लगाय केती सृष्टि तिराई ।।४
सतगुरु आत्म प्रगट लखाया, जहां मेरी सुरत निरत दोय छाई ।।५
स्वाति बूँद बिन चातक तड़पे, स्वाति मिले जाकी प्यास बुझाई ।।६
पानपदास गये बलिहारी, हरि की रत[2] मेरे मन भाई ।।६

१=मुग्ध २=प्रेम

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी ।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ।।
नमोः संत सतगुरु जिन्हों तत्व दीन्हा ।
नमोः दास पानप जिन्हों तत्व चीन्हा ।।
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फल पायंतं ।
गुरु के चरणारबिंदं नमस्कारं-नमस्कारं ।।

इति, ब्रह्म विद्या षष्ट वाणी ।

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

-॥- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -॥-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या सप्तम् वाणी

सुरत

शब्द सुरत के साधारण अर्थ हैं-वृत्ति, चेत, लौ आदि। कबीरदास ने सुरत को अगम-धारा बताकर इसके द्वारा स्वामी का सुमिरण बताया है:—

"कबीर धारा अगम की, सतगुरु दई लखाय।
ताहि उलट सुमिरण करो, स्वामी संग मिलाय॥

पानपदास जी ने "गगन डोरी", "अमी धारा", "कन कुमारि", "बेल एक डार बिन पत्ती," आदि वाक्यों से सुरत की उपमा दी है और इसको ब्रह्माण्ड पिंड का आधार बताया है:—

बर्षे अगम अखंडित धारा, सब बन खंड हरियाया।
अचरज देखा, कहा न जाई, फूला फूल फल आया॥

सुरत का निज स्थान अनामि-पद है। यहां से एक स्फूर्ति उठी और शब्द रूप होकर नीचे उतरी। इसको नाद कहते हैं। यह पद अमृत व प्रकाश का घर है। इस निर्मल चैतन्य धाम से उतर कर ब्रह्माण्ड और पिण्ड में आई और इन्द्रियों द्वारा बाहर फैली। "सकल पसारा सुरत का, सुरत करे सोई होय"। पानी की तरह सुरत का कोई रूप रंग नहीं है, खोल के अनुसार रूप रंग धारन कर लेती है। अभ्यास करने से सुरत सिमट कर जब शब्द में जुड़ जाती है तो इसकी शक्ति महान हो जाती है और यह अपने स्थान सत् लोक में पहुँच जाती है:—

"वा कन-कुमारि बंस बढ़ाव, तब भक्ति मुक्ति का मारग पाव।
बंस बढ़ाय खेल ले खेला, प्रगटं अचरज सहजं मेला"॥

स्वप्न अवस्था में इन्द्रियां सिथिल होती है, बाहर भोग के पदार्थ भी नहीं होते, फिर भी जागृत अवस्था के समान भोग प्रतीत होते हैं। कारण यह कि सब सुख और आनन्द सुरत में हैं। इन्द्रियां केवल निमित हैं। पांचों तत्व, तीनों गुण मन के बिकार हैं और सुरत इनकी सरदार है। भटकती सुरत इनमें लिप्त रहती है माया मोह इसको फंसाए रहते हैं। अतः

"सुरत पकड़ ले संत सयाने, मिटे है गमन तुम्हार"

शब्दी

सुरत तुम्हारी मन भी तुम्हरा. तुम्ही करने वाले ।
कहै पानप घेर बसावे मन में, तौ गृहिणी दीवा बाले ॥१
अपने मन को खोज के, मन में सुरत मिलाव ।
हर हर धुन लागी रहै पानप, तब पहुँचे उस ठाँव॥२
यो मन मरे नाम के जोरे, जो सुरत रटन को लागै ।
सुरत फंदी नाम के फंदे, कहै पानप पलक न लागै ॥३
जब लग मरै न सुरत मन, तबलग सरै न काम ।
मार सुरत मन कहै जन पानप, जीव पावै बिसराम ॥४
जो मन गया तो क्या रहा, जहां मन तहां तन जाव ।
कहै पानप वे सन्त जन मन को राखें ठांव ॥५
चंचल मन स्थिर किया, राखा सूर्त सूं बंध ।
तिमिर मिटा पानप कहै, बासा सत की सँध ॥६
मूल-बंध अजपा जपे हरदम, सुरत निरत मन मिलावै ।
यह विध मनवा स्थिर होवे, यो पार-ब्रह्म को पावै ॥७
भज हरि-नाम तुरत होय परचा, मन स्थिर हो जाई ।
कहै पानप मन स्थिर हुआ, तब सुरत न चले चलाई ॥८
घर के आंगन कूड़ा बाढ़ा, ताको कौन बुहारे ।
घरवाली तो बाहर डोले, पानप कारज कौन संवारे ॥९
तिरया तारन हार है, जो गेह लीजे साथ ।
तिरया, पुरुष दो संग मिले, तब मिटी काल की घात॥१०
बेली एक डार बिन पत्ती, माहि चहुं-दिस फैली ।
देख अचम्भा कहा न जाई, मूल समानी बेली ॥११
गङ्गा जमना और सरस्वती, बहै अमी धारा ।
ताको उलट पीवै जो कोई, मिट जाए देह विकारा ॥१२

अरल

१

सकल पसारा सुरत का, सुर्त करे सोई होय ।
सुरत लगे जो नाम कू पानप, बिथा[1] रहै नहीं कोय ॥१
सुरत करे सब काम, सुरत सूं सब ही सूझे ।
मन अपने की कला, सन्त कोई बिरला बूझे ॥२
मन सूं सुरत मिलाइये, चहूँ-दिस चांदना होय ।
कहै पानप सुनो भाई साधो, हरजन बूझे कोय ॥३

२

सुरत जरे तो कारज होय, जिभ्या कहै कारज नहीं कोय ।
सुरत लगै जो मनकू धाय, दरसन पलक बिछड़ नहीं जाय ॥
जे नर जारैं सुरत मन, तिनका गवन न कोय ।
सुरत जरे बिन पानप, जीव यम के बस होय ॥

ज्ञान-सुखमनी

साधो यही सयान है, सुरत न दीजे जान ।
गुरु लठिया फेर के, उलटी मन में आन ॥१
सुरत उलट मन में बसे, छिनक एक ठहराय ।
कहै पानप जोति निर्मली, सो तेरी दृष्टि समाय ॥२
सुरत फंसी संसार में तासे साहब दूर ।
सुरत बांध मन में धरे, तो हरि आठों पहर हजूर[2] ॥३
कारज होता सुरत से, सुरत करे तदबीर ।
कहै पानप हरि सुमरण बिना, खाली हड़ा सरीर ॥४

—:•:—

१=व्यथा या कष्ट, २=उपस्थित ।

नाम लीला

गङ्गा जमना और सरस्वती, बहै अमी[1] की धारा ।
ताकू उलट पीवै जो कोई, मिट जाये देह विकारा ॥१
ताकू पीवै युक्त योगी, नैन निरन्तर ठावां ।
जिन चाखा तिन स्वाद बखाना, हृदय धर हरि नामा ॥२
काया कांसी गुरु-गम[2] जानी, जहां बहै त्रिवेनी धारा ।
तहां मरते मुक्ता होई, है कोई पहुँचन हारा ॥३
मनसूं मन मिल भया उजाला, मिल नैन सूं नैंना ।
सुरत मिली जहां निरत बिराजे, तब उपजे अमृत बैना[3] ॥४
नाम अधार सार सत सोई, वेद भेद नहीं पावै ।
होय उदासी जग में कोई, सो सत-गुरु मरम बतावै ॥५
हर-हर रटन लगे निसबासर, मुख जीहा[4] नहीं चहिए ।
ऐसी बिध सुमरै जो कोई, तब अमर पद लहिए[5] ॥६
अब मन का भाषू विसतारा, चंचल मन जग छल-छल मारा ।
या मन का कोई भेद न जाने, सुर नर मुनी सभी भुलाने ॥७
यह मन सहस्त्र कला धर खेले, कोई या मन कृ अंत[6] न खोले ।
यह मन पांच तत्व होय खेला, मन ही आप फिरत अकेला ॥८
यह गुण तीन मन की कला, इन त्रिगुण यह सब जग छला ।
यह मन पांच पचीसों भाई, मन की कला पकड़ नहीं पाई ॥९
मन का मरम संत कोई पावै, जाको सतगुरू भेद बतावै ।
परगट रहै देखन मन माहि, उलट देख सकता कोई नाहिं ॥१०
दोहा:—मन को देख उलट के, ब्रह्म अरूपी सोय ।
कहै पानप अकल कलासूं पावै, और उपाय न सोय ॥

१=अमृत, २=कृपा, ३=बचन, वाणी, ४=जिह्वा, ५=पहुंचे, ६=रहस्य,

नाम लीला

जो जन अपना मन पहचानै, हरि की भक्ति सोई जन जानै।
बिन मन खोजे भक्ति न होई, मन बिन यतन भक्ति योंहि खोई।
मन के महरम[1] भरथरी योगी, राज त्याग के भए वियोगी[2]।
अपने मन में सुरत समोई, अन्तर गत[4] की दुबधा[3] खोई।
योग युगति कर युक्ति पहचानी, भक्ति मुक्ति पाई निरबानी[5]।
मनसूं मिलकर गोरख खेला, परम-पुरुष सूं पाया मेला।
सिध भए सब सृष्टि चिताई, उन या मन की गति मति पाई।
मन मिल खेले गोपीचन्दा, परचा पाया भए अनन्दा।
दास कबीर यो मन जाना, सत-गुरु मिल के मन पहचाना।
आठों पहर रहै लौलीना, हरि सुमरन से मन थिर कीना॥
दोहा—जन पानप बिनती करें, निज दासन के दास।
मन पहचाना सुरत जब लगी, तब बाणी भई प्रकास॥१
कहन सुनन की गम[6] नहीं, जो प्रभु करे सोई होय।
करण-हार और नहीं दूजा, घट में सूझा मोय॥२

गगन डोरी

कन[7] कुमार[8] नार है तेरी, जिन वसूधा[9] सगरी[10] जन[11] गेरी॥१
जन-जन गेरे फिर-फिर खाई, तिहूं लोक पल मारत जाई॥२
या कन कुमार बंस चढ़ाओ, तब भक्ति मुक्ति का मारग पाओ॥३
बंस चढ़ाय खेल ले खेला, प्रगटै अचरज सहजै मेला॥४
सो अचरज जन बरनै कैसा, दरसत ताहि मिटै मन मैसा[12]
दोहा—ऐसा तत्त तन में त्याग के, तीरथ भरमै लोय।
कहै पानप पानी के नहाय, निर्मल केंह विध होय॥

१=रहस्य जानने वाला, २=विरक्त, ३=संशय, ४=अवस्था, ५=बाधा रहित ६=पहुँच, ७=शारीरिक-शक्ति, ८=युवा, ९=पृथ्वी, १०=समस्त ११=जन्म देना, १२=मसि, स्याही।

होली

अरी मेरो धुनमें मन अटको माई, लालच लग मनसा छाई ॥टेक
मनसा छाए रही उस दिस में, सुर नर ठांव न पाई।
बाजै पवन गगन चढ़के, सोभा बरनी न जाई ॥१
बेली उलट मूल लिपटानी, बेल मूल नहीं कोई ।
एसो अचरज प्रगटो साधो, पहुप बरसै रे भाई ॥२
अकल-कला षटचक्र बेधे, तब वह धुनि उपजाई ।
चक्र भवर जहां करें कुलाहल, अष्ट-कँवल-दल माहिं ॥३
वह अनहद-धुन सुनके, चँचल मन ठहराई ।
मानो भावै मत कोई मानों, जन पानप कूक सुनाई ॥४

राग सोरठा

घर की नार कुमति है, घर की नार कुमति है ॥ टेक
मैं तां कहूँ बैठ घर माहीं, बाहर दोडी जाती है।
साधों सेती करे धमाधम[1], छैलों के संग राती है ॥१
घर के आंगन दे न बुहारी, घर घर द्वारे फिरती है।
बहु समझाई कहा न मानै, सब काहू सों लड़ती है ॥२
खसम बिचारा माड़ा बोदा, यो बिज्जुमारी[2] मोटी है।
घर के को तुफान[3] लगावे, सरासर योह खोटी है ॥३
पीसे नाहिं करे न रोटी, पानी नाहिं भरती है।
लखन बिहूनी कात न जाने, लखन न एक पकड़ती है ॥४
सुरत नार घर किया बिहंडा[4], स्वादों के संग रमती है।
गुरु कुतका ले पानप मारे, तो भी नाहीं समझती है ॥ ५

—:)०(:—

१=उपद्रव, २=चर्बल ३=आरोप, ४=नाश,

राग कल्यान

सुध नहीं है रे जन्म की, सुध नहीं है रे ।
पल पल रे योह तो, छिन छिन बीती जाय है रे ।।टेक
मेरी मेरी करत फिरत है मन, यहां तेरो कुछ नाहि ।
जो जानै हरि नाम सुमरले, नाहि फिर चौरासी माहि ।।१
जब आन काल घट घेरे, सबहै चलैगो छाड़ ।
माया मोह लोभ लिपटाना, इन रोका तेरो घाट ।।२
धर धीरज आसन कर हृदय, तेरे सब कारज सरजायें ।
पानप कहै समझ मन मेरे, तोसूं बहुत कह्यो समझायें ।।३

२

अरे मन पंछी, अरे मन पँछी, बसो सराय रूचि[1] मानी ।।टेक
कहांसूं तू आया कहांकू तू जाय है? बूझूं मैं एक संदेसा ?
जहां तुम्हरो है ठोड़ ठिकाना, वोह रे कौन सा देसा ।।१
धृग[2] धृग यारी यो भटयारी, झूठी माया नाची ।
आखिर चलना रहना नाहिं, बटया गहो क्यों न सांची ।।२
त्रिकुटी संजम राड़ संत की, भ्रकुटी काल गहंती ।
जे जन आपही ते चल जाई, यम की फांसी कटंती ।।३
गुरु प्रताप तमासा तू देखे, निर्मल ज्योति लसंती[3] ।
अगम घर कहै पानप खोज, ता घर देखो ज्ञान विज्ञान अनंती[4] ।।४

१=चाह, २=धिक्कार, ३ = विराजना, ४= असीम,

राग बिलावल

निगम मरम नहीं पावै श्रीगंगा तेरो, निगम मरम नहीं पाव ॥टेक।
उतर सुमेरुसूँ जग में फैली, जगत रह्यो निदरावै[1]॥१
भटक मरे उन देवो नहीं पाई, भरम भरम में ही गावै ॥२
बहू बिध नहावे प्रतीत न लावे, भटक-भटक फिर आवै ॥३
कोई कोई हर-जन प्यासे उस धारा के, उलट सुमेरु चढ़ावै ॥४
अधर की धार कहै जन पानप, पीवत स्वर्ग पहुँचावै ॥५

२

एरी दिवानी तू एरी दिवानी, अपना बगड़ क्यों न झाड़ै।
संजम सेज पिया की तू तजके, तिहूं लोक हंडयारे ॥टेक॥
पांच सवादी, तिहूँ बकवादी, जिनकी आस तुम्हारी।
इनमें संगी कोई न तुम्हरो, अंतकाल होयें नियारी ॥१
घर के आंगन जग मग चाँदन, ताहाँकू क्यों न पधारै।
कहै पानप घर कंचन तजके, काँच गले में ड़ारै ॥२

३

गुण तज गुण तज बावरी, निर्गुण तेरो साँई ॥टेक॥
अपने गुन लियो फिरे, सो मन न सुहाई।
गुन नहीं जाने पीव के, अनी व्यभिचारी कहलाई ॥१
गुन तज निरगुन खोज ले, सो तो अगम के माहि।
दोय पहुप या बाग में, अनी पछिम दिसाई ॥२
निर्गुण तो नेड़े बसें, तेरे देखन माहि।
माधुरी मूरत सोहनी, अनी सेवो चित लाई ॥३
नारी सुरत सयान है, गुन के संग न जाई।
अटल सुहागन होयगी, पानप कहै समझाई ॥४

१=त्याग

सोहला

समझो समझो सुन्दरी, समझो भरम बिलाय[1] ।
भरम में पिया सुपने ना मिले, गुड़यो खेल सिहाय[2] ।।टेक।।
समझो समझो सुन्दरी, मन कर पति की चाह ।
पति बिन सब व्यभिचारनी, स्वान[3] सूकर[4] जैसी नार ।।१
घर में पति तू बाहर फिरे, अरी यो कौन सयान ।
उलट प्रगट पिया देखले, होय पति-व्रत तेरो नाम ।।२
घर में पति करतार है, तासूं सब कुछ होय ।
ताहि तज तू राची आनसूं, को समझावे तोय ।।३
जिन के आंगन गंग बहै, टेटो भरयो क्यों नहायें ।
जिन संगत घर हंस की, काग काह प्रीति करायें ।।४
पति की सेवा कीजए, सब जग में पत होय ।
फल लागे तासूं मुक्ति सों, करे उपमा सब कोय ।।५
सुर्त लगे सुख उपजे, सांचे आत्म राम,
सुमरत ही संसा मिटे, सुमरो अष्टोयाम ।।६
बार-बार नहीं पाईए, नर नारायणी देह ।
सुरत निरन्तर लाय के, दरसन क्यों न कर लेह ।।७
पांच देवर को संग तजो, त्यागो तीन गुणान ।
अधर अगम पिया मंडला, जहां चेतन स्थान ।।८
पिता सतगुरु बर सोधया, तासूं विवाह रचाय ।
मात ने जनो स्वांस काया, तासूं रहूं लौलाय ।।९
हाथ कंकण मेरे बांधया, मौलि[5] सबद गहीस ।
सत सकत[6] मिल आए के, गूंदे पटया सीस ।।१०
पवन मंडप जहाँ छाया, चौक पुरा जहां सुन्न ।
वहां मेरी भाँवर फिर गई, प्रगटै परम निधान ।।११
अजपा बेदी, चौरी जहां, पंडित ज्ञानी संग ।
वेद सन्मुख वहां उच्चरें, तब भयो बावें अंग ।।१२
कोटि उजाला जगमगे, जहां नहीं सूर और चन्द ।
सुरत नार संजम किया, तब बर भया आनन्द ।।१३
नो नारी इकट्ठी भई, गावें मंगला-चार ।
सुमरन गारी दें सजन को, बाजें अनहद दरबार ।।१४
दास पानप गावें सोहला[7], नैनन निरखें सोय ।
जिन यो सोहला विचारया, ताका गमन न होये ।।१५

१=त्यागकर २=मुग्ध होना, ३=श्वान, कुत्ता, ४=सूअर, ५=चोटी
७=मंगल-गान; ६=बल, शक्ति,

राग मलार

सुरत तेरा ना कोई घेरन हारा ।
ताको घेर सके ना कोई, ते जगत घेर सब मारा ॥टेक॥
सिष्य किए सीख आप न सीखी न कियो सुरत विचारा ।
सुरत गहे बिन मुक्ति न पावै, सिरपे यमकी पैंज़ारा[1] ॥१
पांच पचीस और गुण तीनों, इनकी सुरत सरदारा ।
सुर्त पकड़ ले संत सयाने, मिटै है गमन तुम्हारा ॥२
झीना महल अगम की खिड़की कर मन पवन सिंभारा ।
थिर कर राख वह ससि सूर, यों टूटे जम का जाला ॥३
सुरत पकड़ कोई मन मिलावे, सोई गुरु हमारा ।
कहै पानप पल-पल हरि दरसन, होत जन्म निरवारा[2] ॥४

२

रहने को साज बनाया, मन तैं यहां रहने को साज बनाया ॥टेक
यहां तू रहने को साज बनावे मन, जहां कोई रहन न पाया ॥१
गहरी सी नींव दिवाए महल की, माढ़ी[3] मंडप छाया ॥२
टूटी अवध हुकम आया लेने, छाड़ चला सब माया ॥३
स्थिर थीर मुक़ाम इस तन में, सो थिर घर नहीं पाया ॥४
गुरु–गमसूं आत्म लख पानप, गुण ले तहाँ समाया ॥५

१ = जूता, २ = मुक्ति, ३ = मढ़ी, कुटी ।

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी ।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ॥
नमोः संत सतगुरु जिन्हों तत्व चीन्हा ।
नमोः दास पानप जिन्हीं तत्व चीन्हा ॥
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फल पायंतं ।
श्री गुरु के बारम्बारवंदं नमस्कारं-नमस्कारं ॥

इति, ब्रह्म विद्या सप्तम् बाणी ।

ॐ

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

-॥- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -॥-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या अष्टम् वाणी

सुमिरन

सुमिरण कहते हैं भगवान के स्मरण को, उनका चिन्तन, जाप, करने को। इसकी विधि हर मत के अनुसार पृथक-पृथक हैं। पानपदास जी का कथन है कि हरि हृदय में स्थित हैं अतः अपने से बाहर की वस्तु को पूजना, सेवा करना, व्यर्थ है:—

किसको ढूंढे, किसको पूजे, हरि हृदय के बीच।
हृदय खोजे सुरत सूं पानप, लई सतगुरु की सीख॥

गुरु मन्त्र द्वारा सुरत साधन ही परमात्मा का सुमिरण है। इससे हरि सुगमता से मिल जाते हैं। पाहन-पूजा, तीर्थ, व्रत सब भ्रम हैं समय को नष्ट करना है। संसार में भटकना है:—

ब्रह्म स्वरूप अन्तर रहै, और बाहर पानप सेया।
पाहन सेती परचा लिया पानप, जन्म अकारथ खोया॥

यह मूर्ति पूजा एक हरि को अन्तर में तज कर अनेकों में वैश्या की भांति भटकना है। जो नारी अपने पति को छोड़ कर दूसरों में रमती है उसको जन्म-जन्म सुख नहीं मिलता:—

एक तजे अनगिन भजे, सो नारी बेसवा जाण।
वह पति की कैसे भई, पति को ना पतियाण॥

ब्रह्म एक है वह अपने भीतर है पति-व्रत नारी के सदृश उस ब्रह्म से ही प्रेम करना उचित है उसी की सेवा करनी चाहिए, उसी का ध्यान करना

चाहिए:—

भरमसूं कारज ना सरे, भ्रम बूड़ा संसार।
कहै पानप नाम हृदय धरे, पल में भवजल पार ॥

सब भ्रम त्याग कर हृदय में राम नाम धारण करो। राम नाम की महिमा अपार है; यह बीज मन्त्र है इसका जाप मुख व माला द्वारा करने से मन की चंचलता बन्द नहीं होती, जब तक मन थिर नहीं होता है तब तक काम नहीं बनता:—

मनसा दौड़ी फिरत है, कहै जिह्वासूं राम।
कहै पानप नहचे कर जानो, कुछ ना सरै काम ॥

राम नाम का जाप सुरत द्वारा करना ही सार है जिसकी रीति यह है:—

"पांच तत्त की डोरी करके, मनका मनया पोवै।
सहज सुमरन होय सुरतसूं, कहै पानप मुक्ता होवै ॥
द्वादस अंगुल माला फेरै, अजर अमर घर पावै।
कहै पानप बिन जिह्वा सुमरै, सुन्न मण्डल लौ लावै ॥

ऐसा स्मरण आठो पहर होता रहे, तब राम नाम शरीर में पुर जायेगा जिससे मन, बुद्धि, शरीर सब निर्मल बन जावेंगे। भ्रम नष्ट हो जायेंगे संशय मिट जायेंगे, और जीव तीनों गुणों को त्याग कर चौथे देश में बास करेगा।

"गुण तिरगुण तिहूं लोक में, ब्रह्मा, विष्णु, महेस।
संत बसें वहां पानपा, अगम चोथा देस ॥

चौथे पद को प्राप्त करके जीव आनन्द में मग्न हो जाता है, गुन रहित बन जाता है। यही जीवन का लाभ है, और यही योग है जिसको पाकर आवागमन नहीं होता:—

घट में देखा नयन भर, नयन नयन ही ऐन।
कहै पानप ऐसा तत्त विचारा, तब पाया सुख चैन ॥

इस परम तत्व को प्राप्त करने के लिए पानपदास जी जीवों को चेतावनी देते हैं, कि भाई यह अधिक सोने की बान छोड़ो पेट भर खाना और फिर सो जाना यह जीवन नहीं है, संसार एक रात का सुपना है। यहां के भोग नाशवान हैं। उठो जागो और हृदय में हरि को पहचानो और उसका स्मरण करो:—

कहै पानप वो नहीं जागना, जो रात दिन जागे।
सुरत निरत ले जागना, हरि के चरनों लागे ॥

शबदी

(१) जागना:—जागो-जागो लोगो हो, नींद न धरो प्यार ।
जैसा सुपना रैन का, ऐसा यो संसार ॥१
जागो-जागो लोगो हो, हृदय सुमरन कर सार ।
यम की त्रास मिटत है, जन पानप कहत पुकार ॥२
जे नर निर्भय सोवते, तिन्हों गवांया मूल ।
राचे विषय[१] विपरीत सूं पानप, रहै नाम को भूल ॥३
जो चाहै अपना भला, तज सोवन की बान ।
तेरे सिरपे पानप, गह रहो काल कमान[२] ॥४
रे मन मेरे जाग तू, तोहि बहुत कहा समझाय ।
सुरत निरत ले जागे पानप, तो तेरा घर बच जाय ॥५
पेट भरे सो नींद सतावै, पेट भरे बैठन नहीं पावै ।
पेट भरे पर जो नर सोया, तिन ने अपना सरबस[३] खोया ॥६
कहै पानप यो नहीं जागना, जो रातों दिनों जागे ।
सुरत निरत ले जागना, हरि के चरणों लागे ॥७
युक्ति बिहूना[६] जागना, जैसा जागा चोर ।
कहै पानप सबद पहचाना नाहीं, सूली दिया भोर[४] ॥८
सुमरन सहित जागना सच्चा, बिन मुख जिह्वा नाम ।
सुर्त संग ले जागे पानप, तापे मैं बलि जांव ॥९
सोवेगा सो रोवेगा, जागेगा अनुरागेगा[५] ।
जाग-जाग गुरु-सबद विचार, कहै पानप तिन दरस तैयार ।१०
जागे कोई संत जन, सोवे सब संसार ।
हर जन जागे पानप, हरदम नाम संभार ॥११

१=भौतिक पदार्थ, २=तोप, ३=सर्वस्व, सब, ४=भ्रम ५=प्रसन्न ६=रहित

(२) मालाः—केते भजन करें मालासूं, केते मुखसूं कहें राम,
जब लग भजे न सुरत मन, कहै पानप सरै न काम ॥१
भजन करे जो सुरत मन, अगम में आसन मार ।
ऐसे भजे सोइ तिरै, जन पानप कहत विचार ॥२
माला तो करमें फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं ।
मनवा तो चहुँ-दिस फिरे, यो तो सुमरन नाहिं ॥३
करसूँ माला पटक दे, हृदय सुरत सँभाल ।
कहै पानप ऐसी जुगत उपावे, तो काहै व्यापै काल ॥४
जैसे माला कर में फेरे, ऐसे मन फेरे मन माहिं ।
कहै पानप हर हाजिर तासूं, एक पल बिछड़े नाहिं ॥५
पांच तंत[1] की डोरी करके, मनका मनिया पोवे[2] ।
सहज सुमरन होय सुरतसूं, कहै पानप मुक्ता होवे ॥६
अजपा जपे बिना मुख माला, यों सुमरे हरि पावै ।
पानप कहै भरम में सुमरे, राम हाथ नहीं आवै ॥७
घर के आंगन आवै जावै, द्वादस अंगुल माला ।
कहै पानप भजते मुक्ता होई, है कोई फेरन वाला ॥८
द्वादस अंगुल माला है, कोई संत सयाना फेरे ।
कहै पानप संसार न जाने, संत कहत है टेरै[3] ॥९
द्वादस अंगुल माला फेरै, अजर अमर घर पावै ।
कहै पानप बिन जिह्वा सुमरै, सुन्न मंडल लौ लावै ॥१०
जाकी सुन्न मंडल लौ लागी, दर्शन भया प्रकासा ।
कहै पानप अलख अरूप दरसाया, मिटगई यम की त्रासा १२

१=तग, २=पिरोवे, ३=पुकार

(३) संसयः—पुर गयो नाम सरीर में, संसय दियो जराय।
कहै पानप सोई विकार था, जिन काज संवारा जाय ॥१
सुमरन सूं साँसा मिटे, यो तू निज कर जान।
पानप को सतगुरू कहैं, तू सुर्त गगन में आन ॥२
अगम अगोचर खोज सुरतसूं, संतो ने हरि पाया।
कहै पानप हरि दर्शन हुआ, संसा सहज मिटाया ॥३
यारो चित्त में घर करो, रहो नाहिं अचेत।
कहै पानप टुक समझ लो, सतगुरु हेला[1] देत ॥५
जो कोई घर में चित्त करे, सांसा सब मिट जाय।
कहै पानप वहां दर्श है, देखो सुरत लगाय ॥४
कहै पानप मरना सीस पर, नहीं मरने को सांसा।
हरि नाम हृदय ना धरे, जग जीवन ही की आसा ॥६
जीवत जग में कोई ना जिया, मर जिया हर-रस पीया।
कहै पानप सुनो भाई साधो. सो जन जुग-जुग जीया ॥७
जो मरने से डरत हैं, तो जीवत क्यों न मरें।
मरत पड़े यम की फंद में, जीवत मर उधरें[2] ॥८
जो चाहे जीवत मरा, तो जगसूं सुरत सुलझाव।
कहै पानप बचे यम त्राससूं, मन में उलट बसाव ॥९
मरने माहि अधिक सुख, जो मर जाने कोय।
सुरत बांध अंतर घर पानप, परम सुखी सोइ होय ॥१०
हरि भज भाई, हरि भज भाई, सबही कहैं भजे कोइ नाहीं।
हरजन भजें पकड़ के मनसा, कहै पानप तिनका मिट गया संसा।११

१=पुकार, २=उद्धार होना।

(४) त्रिगुनः—गुण, औगुण सब काज बिगाड़े, तांसू फंसा सकल संसार ।
कहै पानप जो गुण को त्यागे, तो उतरे भवजल पार ॥१
जब लग देस बसै तिगुंण के, तब लग जम की फांसी ।
आवागमन कौन विधि छूटे, पानप को यो हांसी ॥२
तीन गुणों के देस बसत हैं, हरि को कैसे पावै ।
तीनों त्याग तके चौथे को, तब उस घर समावै ॥३
ब्रह्मा विष्णु, महेस के, सब जग रहा भरोसे ।
जा दरसन को संत जतावें, वह दरसन उन्हें न होसे ॥४
पांच तंत गुन तीन को, आगे घेर बसाव ।
कहै पानप सहज थके, तू चरणों सुरत लगाव ॥५
करतम कर्ता मस्तक ऊपर, ताकि नाहिं प्रतीत ।
कहै पानप जन त्रास सहै, मिथ्या जग की रीति ॥६
सांच गहो मिथ्या तजो, तासू कारज होय ।
मिथ्या भाषे पानपा, कारज सरै न कोय ॥७
जो प्रभु को दो कहत हैं, सोई दोज़ख जायें ।
जिन नहीं जाना एक को, कहै पानप नरक समायें ॥८
रम रहा राम सकल घट माहि, सो तो राम आवे न जाई ।
आवे जावे सो आवागमनी, ता सुमरे कारज न कोनी ॥९
राम कृष्ण मुखसूं कहै, प्रेम भक्ति यो नाहिं ।
प्रेम भक्ति तब जानिये, करे राम रटन मन माहिं ॥१०
राम कृष्ण मुखसूं कहै, सुरत फिरे है दौड़ी ।
कहै पानप गुरु-शब्द बिन, पलक मुड़त न मोड़ी ॥११
सुरत मोड़ अंतर धरें, ते जन प्रभु को प्यारा ।
कहै पानप सुनो भाई साधो, वो जन जग में न्यारा ॥१२

(५) पाहन:—ब्रह्म अरूप अंतर रहा, बाहर पाहन सेया ।
पाहन सेती परचा लिया, पानप जन्म अकारथ खोया ॥१
कहै पानप जग अंध न सूझे, पार-ब्रह्म घट माहिं ।
पाहन पार-ब्रह्म कर पूजे, यह क्यों न नरक को जाहिं ॥२
पूजा पर सूझा नाहीं, निज होता आत्म-राम ।
कहै पानप बिन आत्म खोजे, सरा न एको काम ॥३
आत्म तज पाहन को पूजे, यो भ्रम-भक्ति है धोका ।
आत्म सेवो सुरतसूं पानप, ताको दरसन अलख अनोखा ॥४
दरसन अलख अनोखा पाया, जरा-मरन से छूटे ।
पानप गुरु गम बसा अगम में, तब तिर्गुण को कूटे ॥५

(६) परमात्मा:—पूजूँ तो परमात्मा, दुजा पूजूँ काहि ।
सतगुरु सेती सूझ पड़ी है, सुरत धरूँ मन माहि ॥१
विश्वरूप परमात्मा, रहा सकल जग माहि ।
बिन सतगुरु पानप कहै, पावे कोई नाहि ॥२
किसको ढूँढे किसको पूजे, हरि हृदय के बीच ।
हृदय खोज सुरतसूँ पाइये, ना लई सतगुरु की सीख ॥३
सतगुरु मिले बतावे ताको, जो कोई आपा मेटे ।
चाल जगत की तजके पानप, सहज रामसूं भेंटे ॥४
चाल जगत की वेद पुरान, ताकू तीन लोक की जान ।
हरि घट पानप अगम अपार, बिरला पहुंचे सीस उतार ॥५
सीस उतार पांव तले धरे, गुरु के शब्द गह जीता मरे ।
अगम अगोचर आत्म जान, कहै पानप परसा निर्मल-धाम ॥६
खोजी मिले तो निकट है, भ्रम पड़े को दूर ।
आत्म सेव सुरत सूं पानप, आठों पहर हजूर ॥७
पानप आत्मपुर बसा, जग सूं सुरत सुलझाय ।
अपने मन को खोजके, मन ही माहि समाय ॥८॥

(६) नारी :—एक तजे अनगिन भजे, सो नारी बेसवा जान ।
वह पति की कैसे भई, पति को ना पतियान[4] ॥१
कहै पानप जब बेसवा भई, जाके नहीं ख़सम गुसांई ।
आत्म-राम समीप त्याग के, घर-घर भटकन जाई ॥२
पिया की खिदमत ना करी, कीने बहुत सिंगार ।
आन के संग रच रही, क्यों सांई करे प्यार ॥३
घर में पति मिला नहीं, तासूं बाहर मिलती ड़ोले ।
कहै पानप व्यभिचारनी, तासूं कहां लग बोले ॥४
नारि कहावे पति की, आनन के संग राची ।
कहै पानप इनके सँग न जाईये, जिनकी मति है कांची ॥५
जे पतिबर्ता पीव की, भूली सब सिंगार ।
आठ पहर पानप कहै, पति की खिदमतगार ॥६
नारि अपने पीव की, पति बिन पल न सुहाय ।
कहै पानप पिया देखे जिवे, बिन देखे मरजाय ॥७
पीव की व्याकुल बिरहनी[1] बिसरी नींद और भूक ।
पीव मिलन कू पानप, उठे देह में हूक[2] ॥८
बिसरी खावना सोवना, भई मित्र की चाह ।
मित्र मिले तब चैन हो, बिना मित्र सुख नाह ॥९
मरने से जग ड़रत है, मोहि मरने को चाव ।
कहै पानप जीवत मरूँ, मिलूँ मित्र प्यारे जाव ॥१०
अकड़ तकड़[3] तू छोड़ दे, करो कंत की सेवा ।
रीझे कंत करे जो बकसीस, खाय अमरफल मेवा ॥११
आत्म खोज सुरतसूँ मनमें, अटल सुहागन सोय ।
कहै पानप पियासूँ मिली, तो रांड़ी कभी न होय ॥१२

—:)o(:—

१ = वियोगनी, २=पीड़ा, ३=घमण्ड, ४=[illegible], ५=[illegible] ।

परण[४] हारी किस काम की, पी परन गहे सोई प्रणधारी।
कहै पानप पिया परन गहै, सोई पिया को प्यारी ॥ १३
सोई सतो सुरत मन जारे, तो तुरत पियाकू पावै ।
कहै पानप यो पीव मिलेना, मिरतकसूं लौ लावै ॥१४
पार-ब्रह्म सर्व पूर्ण, खसम् सकल का सोय ।
खसम न देखा पानप, यो तिरया कौन की होय ॥१५
घूंघट का पट टूटा नहीं, पिया की सुरत ना पहचानी ।
भ्रम साथ भ्रमत फिरे, पानप ते नारी बौरनी ॥१६
घूंघट का पट खोल सुरतसूं, पिया की मूरत लई पहचान ।
चरनों में राची रहै पानप, ते नारी सुरज्ञान १७
(८) नैनन:—घट में देखा नयन भर, नयन नयन ही ऐन[१] ।
कहै पानप ऐसा तत्त[२] विचारा, तब पाया सुख चैन ॥१८
है अदेखे, दीखे सदा, टुक देखन की ढील ।
नैना भर भर देखिये पानप, तो मिलत रहै अमिल ॥१९
नयना[३] ऐना[४] देख सुरतसूं, सेवो चित लगाय ।
कहै पानप जोति निर्मली, सूझन लागे ताहि ॥२०
चैन नयन की सैन[५] में, रंचक[६] लहैं जो कोय ।
कहै पानप गुरुप्रतापसूँ, सहजै दरसन होय ॥२१
वे आंखे हैं कान की, तासूं साहब दीखे ।
आत्मराम प्रगट है पानप, विरला हरजन सीखे ॥२२
(९) जिभ्या:—मनसा दौड़ी फिरत है कहै जीभसूं राम ।
कहै पानप नेहचे* कर जानो, कुछ न सरे काम ॥१
आठो पहर भजा ही करिये मनसासूं हरि-नाम ।
कहै पानप सुमरन सार योह, नहीं जिह्वा को काम ॥२

१=ज्यों का त्यों, २=तत्व, ३=आंख, ४=दर्पण, ५=संकेत, ६=तनिक, *निश्चय

(९) जिभ्या सुमरन हाथ जिभ्या नहीं रोके, ऐसा सुमरन सार।
सुमरन कीजे सुरतसूं, हाथ जिभ्या करै कार ॥३
मुखसूं कहै सो थोतरा, हृदय धरे सो सार।
कहै पानप संत पुकार कहत हैं, समझे नहीं गंवार ॥४
मुखसूं कहै सो थोतरा, अन्तर धरे सो सार।
बिन जिह्वा पानप कहै, हर-हर नाम उचार ॥५
सुरत करै ररंकार धुन, नहीं जिह्वा को काम।
पानप कहै सुनो भाई साधो, यह बिध सुमरो राम ॥६
रान नाम मुखसूं कहै, सुरत फिरे चहुँ देस।
पानप कहै सुनो भाई साधो, यो सुमरन नहीं पेस* ॥७
अजपा सोई सुरतसूं सुमरे, मुखसूं कहना नाहि।
अंतर धुन राचा रहे, कहै पानप मुक्ति समाई ॥८
परचा तुरत राम के सुमरे, जो हृदय में लौ लावे।
कहै पानप जो मनसा लागे, तो हरि का दरसन पावे ॥९

(१०) भरम:—भरमसूं कारज ना सरे, भरम बूड़ा संसार।
कहै पानप नाम हृदय धरे, पल में भवजल पार ॥१
हरि दर्शन होय पलक में, परदा तोड़ भरम को।
कहै पानप निरखो अकलसूं, यो है भेद मरम को ॥२
जिनको आसा आनकी, ते नर प्रभु से दूर।
पिता तजो पानप कहै तिनमें कहां सऊर[1] ॥३
आन तजे हृदय हरि भजे, ते जन प्रभु को प्यारा।
पानपदास सत ही सत भाषे, तुम संतो लेहु विचारा ॥४
सोई अपना जो आपा खोजे, बाहर भटके नाहिं।
आत्म खोजे सुरतसूँ पानप, ते आपे माहि समाई ॥५
हरि को सुमरे सुरतसूं, आसा आनकी डार।
हृदय सुमरे पानपा, तापे साहब करे प्यार ॥६

१=शऊर, सलीका *=स्वीकार

होली

खेलूं लाल पहिचान, अपनो में खेलूं लाल पहिचान ।
आत्म रूप सहज लख पायो, बिसरगई सब आन ।।टेक
उपजी लगन लालसूं खेलूं, गल गए मान गुमान ।
मेरे एक तूही मेरो सांई, तुम्हरे मोसी अन केह काम ।।१
ए गुनगार[1] कियो रंग केसर, निरत निरत कर छान ।
ज्ञान कनक[2] भर भर पिचकारी, छिरकूं आत्म राम ।।२
लोक लाज मैं बिसर गई हूँ, भयो जब लाल मिलान ।
हर हर धुन गारी दूं निसबासर, भूल गई कुल कान ।।३
अगम महल में खेल हमारो, प्रेम सुरत भई जान ।
पानपदास खेल वही खेले, बलि-बलि[3] कीन्हे प्राण ।।४

२

मैं तो वाही घर चली जाऊं, जहां साजन मेरो ।
मैं तो वाही घर चली जाऊँ ।।टेक।।
अलग देहसूं अधर ठिकाना, सुरत संग ठहराऊँ ।
इत उत पलक चलन नहीं पावे, मैं तो चरनों प्राण चढ़ाऊँ ।।१
तीन गुनों के देस रहूँना, चोथे पद समाऊं ।
बिन बजाय अनंत धुन बाजें, मैं तो बिन जिभ्या गुन गाऊँ ।।२
पांच पचीसों ठगनी नारी, इनते मैं आपा बचाऊँ ।
बिनही फंद ज्ञानसूं पकडूं, मैं तो अगम को बांध चलाऊँ ।।३
झीना महल अगम की खिड़की, प्रेम की सेज बिछाऊँ ।
रूप रेख बिन सोहनी मूरत, निरख निरख बलि जाऊँ ।।४
ब्रह्म की भट्ठी अमीरस चूवे, छक छक मन्हे छकाऊँ ।
कहे पानप सतगुरु की गमसूं, बहुर न भवजल आऊँ ।।५

१=सानकर २=नाग केसर, ३=नोछावर ।

राग इकहरा

हरि सुमरन की गठरी करले, आख़िर तो मर जाना है ।
जो समझे तो समझ प्राणी, नहीं फिर पछताना है ॥टेक
आठों पहर सुरतसूं सुमरे, हृदय बीच ठिकाना है ।
सतगुरु का उपदेस लहे कोई, जिन जाना तिन जाना है ॥१
निकट वस्तु खोजे जो कोई, अगम अगोचर थाना है ।
अलख अरूप अचल जहां आसन, कह कह जग बौराना है ॥२
पंडित पढ़ पढ़ पुस्तक पोथी, राम नाम बिसराना है ।
काज़ी मुल्ला पढ़ें कुराना, दिल की याद भुलाना है ॥३
तन मन सेती ताली लागी, परम पुरुष प्रगटाना है ।
अकल अराध कहै जन पानप, गुरु-गमसूं पहचाना है ॥४

२

हर बिसरे तेरा हाल न कोई, नाम बिसार जमा सब खोई ।टेक
हर बिसरे संसा प्रचन्ड, हर बिसरे सिर यम को दंड ।
हर बिसरे ते होय दुख भारी, हर मत बिसारो नर और नारी ॥१
हर बिसरे नरक पड़ीजे, हर बिसरे चौरासी में दीजे ।
हर बिसरे ते तेरा संगी न कोई, अन्त अकेले चलना होई ॥२
हर सुमरन ते सब दुख भंजै, हर सुमरन ते यो मन मंजै[1] ।
हर सुमरै सोई जन सारा, हर सुमरै सोई हर को प्यारा ॥३
हर सुमरन पल पल में कीजे, हर सुमरन हृदय धर लीजे ।
जौ जन आतम होय संगाती, अनहद शब्द सुनै दिन राती ॥४
हर सुमरन ऐसी विधि करिये, मनसा बांध नवे खंड धरियें ।
तापर यो मन लौ लावै, अलख अरूप दिष्टि समावै ॥५
नीची दृष्टि अधर कू चोट, ब्रह्म ज्ञानी की ऐसी मूठ[2] ।
जे जन जग में ब्रह्म ज्ञानी, जन पानप तिसपे कुरबानी ॥६

१=साफ, २=पकड़

राग बिलावल

रूप अरूपी राम हमारो, रूप अरूपी राम ।
देह धरे जो राम कहावे, तासूं न मेरो काम ॥टेक॥
बिनसन-हार[1] देह धर आयो, साहब केह विध कहिए ।
साहब को दूजा कर जानें, तो नरक-कुंड में जइए ॥१
खोजी खोजै, खोज तब पायो, व्याप रह्यो सर्व माहि ।
निपट निकट हरजन कोई जानें, ताको सीस नवाहि[2] ॥२
देखत अकल-कलासूं दीखे, ताहि भजूं अष्टोयाम ।
पाचों को गुरु पकड़ लिया, तब मन पायो बिसराम ॥३
अंतरयामी अंतर देखा, उलटी दृष्टि समान ।
कहै पानप जब सुरत बिचारी, परसो निर्मल धाम ॥४

●⁑—⁑●
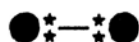
ज्ञान-सुखमनी

दोहा:—घट में देखा नयन भर, सतगुरु के प्रताप ।
कहै पानप गुरु कृपा कीन्हीं, जपा अजपा जाप ॥१
अजपा जपे बिन मुख जिभ्या, अधर धार में खेले ।
कहै पानप मनसासूं सुमरे, तो यम जालिम कों पेले ॥२
पावे युक्ति अतक को ताके, हर दम चोट नाम के नाके ।
औघट घाटी लगा रहे, जोरे नाम के काल को दहे ॥
उलटे अंतर घाले घात, यह विधि रहे नामसूं रात ।
हरजन ऐसी युक्ति उपावे, कहै पानप भवजल नहीं आवे ॥

१=सावधान, २=झुकाना ।

बसंत

धन धन दयाल मेरे दीन बन्धु, तुम करुणामयि सर्व के दीहन्द ।।टेक
तुम अन्तरयामी जानराय[२] , प्रभु काह राखूं तुम से दुराय ।
तुम सर्व पालन देवा देव, प्रभु मैं मलीन जानी नहिं सेव ।।१
जित कित प्रभु जी मैं देखूँ तोय, मोहि दीखे नाहीं और कोय ।
तुम ही देखो मेरे देखन-हार, मैं क्या देख सकूं मेरी मत गवांर ।।२
मछली तड़फे बिछड़े नीर, ऐसे तुम बिसरे मोहि व्यापे पीर[१] ।
मछली जीवे नीर पाय, तेरा जन जीवे दरसन समाय ।।३
मेरा जीवन तुमरो नाम, मोहि सूझे नाहि और ठांव ।
कहै पानप प्रभु लेहो राख, सांची विरद तुम्हरो मैं सुनी है साख ।।४

२

करो चाव मन करो चाव, आई रुत[३] बसंत मन करो चाव ।
पिया के मिलन को बनो दाव ।।टेक।।
पति निर्गुण गुण भरी नार, तासूं नाहि सह्यो[४] प्यार ।
गुन तज लागे आत्म सेव, तोकू सहज मिले सखी अलख-देव ।।१
पति घर में तोहि प्रतीत नाहि, निरख नैन वह तो रह्यो समाय ।
बिछड़ गये पड़े दूर जाय, फिर जन्म जन्म मिलना नाय ।।२
तू तो दौड़े बद्री, जगन्नाथ, किस किस के हरि आये हाथ ।
अब चल सजनी अगम पंथ, वहाँ सूनी सेज पे सुख अनंत ।।३
जो तोहि पिया के मिलन की हिलग[५] होय, मन ही खोज समझाऊँ तोय ।
पहले करले साधु संग, कहै पानप प्रभु सूँ यूँ बाढ़े रंग ।।४

१=वेदना, २=महा ज्ञानी, ३=ऋतु, ४=योग्य, ५=लगन ।

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी ।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ।।
नमोः संत सतगुरु जिन्हों तत्व चीन्हा ।
नमोः दास पानप जिन्हों तत्व चीन्हा ।।
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फल पावंतं ।
श्री गुरु के चरणारविंदं नमस्कारं-नमस्कारं ।।

इति, ब्रह्म विद्या सप्तम् वाणी ।

• ॐ •

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

-॥- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -॥-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या नवम् वाणी

योग

"आठों पहर युक्त सो योगी, गगन गुफा में रहना" यह है पानपदास की योग परिभाषा। सुरत को गगन में चढ़ाकर आत्मा में सर्वदा लीन रहना योग है। ध्यान-योग में तीन क्रियाएं मुख्य हैं:—(१) चित्त की एकाग्रता, (२) सीमित जीवन, (३) समता।

चित्त की एकाग्रता से साधन शक्ति बढ़ती है मनका निग्रह होता है, हृदय में शांति आती है। पर यह शांति तब सम्भव है जब मन संसार में न भटक कर आत्मा में रमन करे। परमात्मा रूपी साहूकार ने सुरत रूपी पूंजी जीव को सौंपी है। जब जीव इस पूंजी से उचित व्योपार करके मूलधन को लोटा देता है। तो वह भगवान का प्रेम-पात्र बन जाता है:—

'पूंजी जमा सुरत है तेरी, धर मन की थेली मांहि।
कहै पानप प्रतीति बढ़ेगी, लेगा साहब बुलाय॥

अपनी ज्ञान-शक्ति को हम तुच्छ बातों के चिन्तन में नष्ट करते हैं। दिन रात संसारी विषयों में लिप्त रहते हैं। ईश्वर से तन्मय होकर क्षण भर भी संसार को भुलाने का प्रयत्न नहीं करते अतः चित्त की एकाग्रता के लिए बाह्य अनावश्यक चिन्तन छूटना चाहिए प्रत्येक इन्द्रि पर पहरा बैठना चाहिए—मैं अधिक खाता तो नहीं, अधिक सोता तो नहीं; अधिक बोलता तो नहीं, मुख में लोलुपता तो नहींहै—इस प्रकार विवेक-पूर्ण जीवन यापन मन के निग्रह में सहायक होता है। शरीर को तपाना, तोड़ना, मरोड़ना सब व्यर्थ क्रियायें हैं इनसे मन की चंचलता और बढ़ती है:—

तन को त्रासा मन नहीं फांसा, भूखे मरे क्या होई।
कहै पानप मन को गह राखो, हरजन सांचा सोई॥

फिर मन की स्थिरता के लिए सम दृष्टि अथवा शुभ दृष्टि होनी चाहिए हम अपना विचार दृढ़ कर लें कि विश्व मंगलमय है यहां के सब पदार्थ पवित्र हैं शुभ हैं, यदि कहीं त्रुटि प्रतीत होती है तो वह अपने में त्रुटि है। ऐसे विश्वास से जीवन निर्भय और शान्त हो जायेगा, सर्वत्र प्रभु ही दीखेंगे। संसार प्रभु का क्रीड़ास्थल दीखेगा और हम अपने अंतर में आनन्द मग्न रहेंगे यही योग-युक्त-योगी की अवस्था है।

शबदी

(१) योग :—आठों पहर मुक्त सो योगी, गगन गुफा में रहना ।
पानप कहै बात यो सांची, भ्रम साथ नहीं बहना ॥१
भटके सुरत निरत नहीं स्थिर, मूरख काह सिहाय ।
पानप कहै बहें दोऊ तन मन, योह कैसा योग कमाय ॥२
योग कमाया चाहे, सुरत निरत लौ—लाव ।
कहै पानप वहाँ परम पुरूष हैं, निज हरि दरसन पाव ॥३
जो तू चाहे एक को, तो योगी हो न सेख ।
कर दर्पण मन आपना, तामें वाकू देख ॥४
करना होय सो सब कर लीजो, अकरन भरी बात ।
कहै पानप अकरन योही, मन में सुरत समात ॥५
करनी करे सो कर्म है, यमसूँ जीव न छूटे ।
अकरन करे कहै जन पानप, तब यम का जाला टूटे ॥६
कहै पानप अकरन योही, जलमें पवन समोवे ।
जलमें पवन समात है, तब जल स्थिर होवे ॥७
धोती कीनी नेती कीनी, बहु बिध धोई काया ।
कहैं पानप ताकी सुधि नहीं, इस मन ने जग छकड़ाया[1] ॥८
मन भटके भटके सुरत, मूरख ने काया त्रासी ।
कहै पानप योह भरम भुलाना, पड़ी गल यमकी फांसी ॥६
जिन कुछ साधा सुरत मन, तुरत तमासा देखा ।
कहै पानप निर्मल ज्योति प्रकासी, मिट गए सभी परेखा[2] १०
तनको आसा मन नहीं फांसा, भूखा मरे क्या होई ।
कहै पानप मनको गह राखे, हरजन सांचा सोई ॥११
जो कुछ कीजे सुरतसूँ, सो करनी प्रमाण[3] ।
कहै पानप क्रिये देह के, रीझे ना भगवान ॥१२

१=धोखा, २=भ्रम, ३=यथार्थ,

(२) पूजी :—पूंजी जमा सुरत है तेरी, सो तें देई गवांय।
काह दिखावे साहको, कहै पानप धके खाय ॥१
पूंजी जमा सुरत है तेरी, धर मन की थेली माहि।
कहै पानप प्रतीति बढ़ेगी, लेगा साहब बुलाय ॥२
पूंजी सोंपी साहने, गहो साह के चरणा।
कहै पानप पूंजी चरन चढ़ायो, मिट गया जीना मरना ॥३
अपनी वस्तु अपने घर में, ताकू खोजे नाय।
कहै पानप घर में रतन, यो घर घर भटकन जाय ॥४

(३) घट :— ग़रज़ लगी है एकसूं, और दूजे से नाहिं।
जासूं हमरी गर्ज़ है पानप, सो हमरे घट माहिं ॥१
घटकू खोजे, आतम सेवे, सो हरि सरन आया।
मनसा लाग कहै जन पानप, हरजी दरस दिखाया ॥२
संतो घट में हरि लह्या, सतगुरु शब्द बिचार।
कहै पानप प्रगट आत्मा, सुरतसूं लई सिंभार ॥३
राम नाम का आसरा, वाही की प्रतीति।
कहै पानप मैं घट में देखा, तजी जगत की रीति ॥४

(४) नैन :— आंखे खोल के देखले, आगे खड़ा अलेख।
कहै पानप पावे अकलसूं, ताके रूप न रेख ॥१
दो नेत्र बिच नासिका, जहां सरोबरमान।
सुरत सहित जिवड़ा चढ़े, जन पानप करत बखान ॥२
कहै पानप आंखें खुली नहीं, तौ सब पेखने[1] पेखेगा[2]।
आंखें खोल नहीं देख सका, तो आंखे मूंद क्या देखेगा ॥३
नैनन में लालन[3] बसें, तासूं लोयन[4] लाल।
कहै पानप दुःख बीसरे, पाय दरस कमाल ॥४

१=तमाशा, २=देखेगा, ३=प्रेमपात्र, ४=आंख,

(५) दर्शनः—प्रातः उठो सुमरन सजो, आठ पहर की याद ।
नवें खंड बासा करो, सुनो अनहद नाद ॥१
अनहदनाद अनन्त धुन बाजें, कोई सुने संत जन सूरा ।
कहै पानप याको भ्रम भागा, जा को सतगुरु मिलियो पूरा ॥२
बाजें तार तंबूरा कैसे, बिना तंबूरे तार ।
कहै पानप जब अनहद उपजी, लागी सुरत जुहार[१] ॥३
टाला टूली क्या करे, तू तार से तार मिलाव ।
मन की खूंटी खेंच के, अनहद नाद बजाव ॥४
पाँचों तार लगे हैं तापर, बाजे अजब सरंगी ।
कहै पानप कोई और सुने ना, सुने साधु और संगी ॥५
बाजे बाजें अनहदा, झिल-मिल, झिल-मिल रूप ।
कहै पानप कोई जन पहुँचे, ऊर्ध गगन मुख कूप ॥६
रंचक[२] ठांव[३] खयाल तहां ऐसे, सुरत लगे सो सूझे ।
मानो समुद्र पर्वत जहां केते, कहै पानप गुरु मिल बूझे ॥७
सतगुरु यह उपदेस बताया, मन मनसा दोऊ बांध ।
कहै पानप वहां दरसन प्रगटे, राखे सत की सांध[४] ॥८

झूलने

जुग जोड जतनसूं खेल प्यारे, फूटी नरदका नहीं निर्वाह है जी ।
दुए तीए की चाल संभाल खेलो, चार दाने मिले तो उबाह[५] है जी ॥१
पंजा बन्द कीजे, छका छेद कींजे, सते सार अठे तो खिलार है जी ।
नवें खेले संभाल, खिलार सोई, पावे दस गयारा निर्वाह है जी ॥२
द्वादस तेज पावे लम्बा जुग जावे, तेरह चौदह अमृत की धार है जी ।
अन्दर पंदरह सोलह संभाल खेलो, सतरह तो छान बीन है जी ॥३
अठारह नर्द[६] की चाल पावे, नहचे[७] घर अपने चली जाय है जी ।
पानप खेले सतगुरु का संग लेकर, बाज़ी जीत मुक्ता फल खाय है जी ।४

१=सहायता मांगना, २=अल्प, ३=स्थान, ४=लक्ष्य, ५=उभार, ६=गोटी, ७=चमक ।

समझ मात्रा

समता सेली[3] पांचों तार, योगी गूंदे निर्गुन सार।
सो सेली ले गल में राखे, संसा निकट न आवे ताके ॥१
डण्ड कमण्डल झोली छिमा, नव खण्ड योगी रामत रमा।
यो रामत कर गमन न होय, ऐसा योगी बिरला कोय ॥२
आड़ बंध सील कोपीन, आठ पहर योगी लवलीन।
नाद बिन्दु के घर में रहे, योग युक्तसूं योगी लहे ॥३
ज्ञान फावडा धूनी ध्यान, तपता योगी परम सुजान।
ब्रह्म अग्नि दिन रैन जगावे, मो योगी फिर योनी न आवे ॥४
चित्त कर चकमक, मनसा पथरी, लावत ब्रह्म अग्नि पर जरी।
तामे त्रिविध ताप जरावे, मस्तक वही भभूत चढ़ावे ॥५
सुन्न सरोवर निसदिन नहाये, चेले पांच लिये लड़[1] लाय।
चेले पांच लिए कर एक, योगी मिटे करम की रेख ॥६
संसा सिंह योगी कोइ मारे, कर बाघम्बर[2], आसन धारे।
आसन अचल पलक नहिं चले, युग बाखें त्रे योगी भले ॥७
गुदड़ी देह सुरत का तागा, निरत सुंई कर सीवन लागा।
सो गुदड़ी कभी छीन न होय, युग युग राखें योगी सोय ॥८
टोपी टापी सहज विचार, सिरपे धरिये जुगत अपार।
ऐसी टोपी जोगी राखे, दरसन सर्वण, विराजे ताके ॥९
फुरवा फहम राखे कर माहि, भूखा रहे न मांगन जाय।
एकादसी व्रत भिक्षा करे, राम नाम फुरवे में भरे ॥१०
यो भोजन नित जोगी करे, तृष्णा आसा सहज मरे।
सो जोगी जग में प्रमाण, घट में परसे पद निर्वाण ॥११
मन कुण्डी, कुतका ब्रह्म ज्ञान, राम नाम बूंटी प्रमान।
छान निरत कर निस दिन पीवे, युक्ता योगी युग-युग जीवे ॥१२
अनहद नाद दया मेखली, नाम सहारा कुबजा भली।
धीरज धरम कमर को कसना, कसकस कमर अगम को धसना ॥१३
पानप ऐसा योगी ढूंढे, कर चेला मेरे मनको मूंडे।
अजपा मंत्र मूल बतावे, सो योगी मेरे मन भावे ॥१४

१=पंक्ति, २=बाघ की खाल, ३=माला।

राग बिलावल

कोई जोगी जुगत कर जागे,
सतगुरु-शब्द विचारो खेले, सकल भ्रम को त्यागे ।।टेक।।
सुन्न ही में ध्यान, सुन्न ही में धुनि, सुन्न में आसन मांडे ।
जिन संसय ने सब जग खाया, ता संसय को डांडे ।।१
आसन त्याग अंत न जाई, नव खंड रामत खेले ।
जोगनकू[१] पल चलन न देई, संग गहे पाँचों चेले ।।२
ज्ञान की मौज[२] गवें[३] को चांदन, गगन चढ़ो ततकाला ।
सदा मस्त हरि रस को अमली[४], पीवे प्रेम प्याला ।।३
नैन नासिका अग्रह आसन, वहां पुरुष अविनासी ।
पल पल में दरसन का लोभी, जगसूँ रहत उदासी ।।४
अड़ा रहे अलख दर्शन में, ऐसा हट्टी योगी ।
भेष अलेख रंग बहू रंगी, कहै पानप राम वियोगी[५] ।।५

२

धृग धृग जग में जीवना, बिन प्रभु की याद ।
ता साधे प्रभु को मिले, मन सको न साध ।।टेक।।
याद बिना बरबाद है, यो मानुष देही,
संग पिछाना ना पड़े, तेरा परम सनेही ।।१
निगम मरम जाने नहीं, वह वस्तु अगाध,
सुरत लगावे सुखमना, सुनो अनहद नाद ।।२
लख चौरासी में संग रहो, संगी आदि अनादि ।
यो अवसर हरि मिलन को, सोई अहला जाय ।।३
याद धरे तेइ मानुसा, कहै पानप दास ।
अंतरसूँ अक्षर लगे, पावे चरण निवास ।।४

२=लहर, ३=जाने को, =४=नशे बाज, ५=बिछुड़ा हुआ ६=सुरत, चित्त

राग आसावरी

ऐसो कोई मिलो ना नाम सवादी,
मानुष-देह मिली बहुतेरी, जो मिलया सो बकवादी ।।टेक
नाम सवादी बिरला हरजन, जिन सुषमन पिंगल साधी ।
मन को पलक चलन ना देई, सुनत अनहद-नादी ।।१
मूल कँवल को ड़िठ कर बांधे, नाम निरतसूं सोधी ।
अजपा जपे बिन मुख जिभ्या, सहज पांच परबोधी[1] ।।२
अलग देहसूं अगम अगोचर, अकल-कला आराधी ।
पल पल में लवलीन ब्रह्मसूं, लागी सहज समाधी ।।३
हृदय याद बिसारे नाहीं, हर-हर धुन लौ लागी ।
सुन्न मंडल में परम जोति को, निरखें ते बड़ भागी ।।४
अष्ट-कवँल-दल अंतर वासा, षट-चक्री कस राखे ।
उलटी दिष्ट पछमकू देखे, अधर निसाना ताके ।।५
आसन मांडे, स्वांसा सोधे, संसारी परमोधे[2] ।
देह निरन्तर परमातमा, ताकू पलक न सोधे ।।६
कह पानप दर्शन का लोभी, दर्शन बिना न जीवे ।
नौ खंड खोज धरे जहां मनसा, दिष्ट भरं भरं पीवे ।।७

राग भैरों

ऐसे घट धोव प्राणी ऐसे घट धोवरे, घटके धोय तत् दरसन होय रे ।टेक
सहज[3] की खुम[4] तीन गुण बेगर[5], दे दे मरोड़ी ममता-जल खोवरे ।।१
ज्ञान कर नीर ध्यान कर सिलवा, तामें साबुन सुरत समोवरे ।।२
कहै पानप ऐसे घट को धोवे, घटके धोय गमन न होय रे ।।३

१=सतर्क, प्रबोध, २=प्रमोध, हर्ष, ३=स्वभाव, ४=भट्टी, ५=पृथक ।

राग कल्याण

अजपा जाप जपो रे भाई, ताते अनहद देत सुनाई ॥टेक॥
अजपा जपये जिभ्या हीन, चतुर विवेकी कोइ पावैं चीन्ह॥ १
पांच पवन एक कर राखे, अकल कला ले मन को ताके ॥२
मन के तके उजाला होय, भ्रम तिमिर मिट जाय है सोय॥३
हर जन ऐसी युक्ति उपावे, चंदा सूर एक घर ल्यावे ॥४
पानप शब्द करो विचारा, समझता होय भवजल पारा ॥५

२

पूँजी रे साहू की मूरख गवांवे, ऐसो बनज न मोहि सुहावे ।टेक
सुन्न-शहर के साहूकार, तिनके मुक्ता-हल ब्योहार ॥१
हर हर रटन गिनती करे सिभांल, आड़त संतन के संग डार ॥२
योही तेरी पूंजी होय अपार, गगन के घर में जाय संचार ॥३
सोई साह मेरे मन भावे, कहै पानप पूंजी धुर पहुँचावे ॥४

राग देव गंधार

चलो हो तो अगम झूपड़िया छावें,
राजा राना छत्रपति भूपत, यहाँ कोई रहन नहीं पावे ।टेक
कैसा अगम कौन विध जाइए, गुरुसों मारग पावे ।
पवन की डोर लगाय सुन्न में, ता लग चढ़ जावे ॥१
जहां नहीं धूप छां नहीं ता घर, ज्ञान सहित ठहरावे ।
जहां कुछ काल जिजाल न व्यापे. हरिपुर वतन बनावे ॥२
बिन करताल पखावज बाजें, बिन रसना गुन गावें ।
कहै पानप निर्मल-पद परसत, बहुर न भवजल आवें ॥३

राग आसाकीवार

टुक लखले मेरी जान झमकड़ा[1] नैनोदा।
नैन झमकड़ा लखले कुड़िए, फेर गुणन की हानि ॥टेक
नैनोदा निज खोज रे देखो, परम तत्त निरवान ॥१
बूझले काहू महरम सखीया, आप में आप पहचान ॥२
कहै पानप ऐसे सबद बिचारे, तो लहे मुक्ति की खान ३

१--राग इकहरा

बिचरो[2] साध राज[3] एक कसबी[4], त्रिबेनी पन सैर करे॥टेक
गगन घरनकू नक सुध साधे, जहां ले साहुल[5] सुरत धरे ॥१
तिकोनी गुनिया दौड़ावे, महल साध कर ठीक करे ॥२
नाम धुनी की बसूली लगावे, ज्ञान ध्यान की ईंट धरे ॥३
पानदास भेद सतगुरु को, सो महल कबहूँ न ड़िगे ॥४

२

गगन मडंल की बाट चलावे, ईंटें नाहीं घड़ता है।
दुनिया को बैठा समझावे, यमसूँ नाहीं ड़रता है ॥टेक
भवसागर को बसीबो[6] छाड़ा, दसवें द्वारे अड़ता है।
षट-दर्शन का सेवक हुआ, मन मनसासूँ लड़ता है ॥१
स्वाद तजो या ममता जलको, ऊर्ध कुएं को चढ़ता है।
अगम महल में आसन मांड़े, निगम नाहिं चित्त धरता है ॥२
गुरु के ज्ञान रैन और बासर, चंचल मन पकड़ता है।
भवसागर को नाम के जोरे, बिन नौका पार उतरता है ॥३
पांचो और पचीसों अपरबल, जुगत अजर यों जरता है।
जरा मरन की आसा छूटी, पानप जीवत मरता है ॥४

२=घूमना, ३=मकान चिनने वाला, ४=पेशा, ५=दीवार सीधी करने का यंत्र, ६=बसक, ७=वास, रहना।

राग सोरठा

भौंरा कँवले खोज ताहि में रहिऐ, तजकर कँवल अनंत न जइऐ।।टेक
वाही कँवल माहि घर तेरा, ताका करले तू खोज सवेरा।
अबके कँवल न पावे, तो तू जन्म जन्म भरमावे ।।१
वोह तो कँवल नीर बिन फूला, अरे नर मूरखता की तू भूला।
उलट कँवल बस माहीं, तेरा जुरा मरन मिट जाई ।।२
नाभि माहि जाकी नाली, लाव अर्ध ऊर्ध्व मध्य ताली।
जिन ऐसी जुगत विचारी, ताको सहज मिलै बनवारी ।।३
जन पानप कहत विचारा, वाही कँवल में सकल पसारा[1]।
वाही कँवल ब्रह्म अरुपी, बिन सूरज धूप प्रकासी ।।४

१=प्रपंच २=दूसरी जगह,

राग गोरी

राम धुन सुनत रहूँ बिन काना,
योही समझ है मूल भक्ति को, ना जिभ्या से कहना ।।टेक
सोधे नाभ निरतसूं अंतर, सुरत गगन को ताना।
सुरत गगन चढ़ अनहद बाजे, कोई सुने संत सुरज्ञाना ।।१
मण्डल अकाश ऊर्ध्व मुख कुआ, चूए अमी की धारा।
पीवे योग-युक्त का योगी, चहुँदिस भया उजारा ।।२
पीवत अमी जन भया मद माता, अनुभव बानी गावे।
गूंगे ने गुड खाय बखाना, सैन, कोई जन पावे ।।३
आवे जाय मरे न जीवे, गुरुमुख खोजी खोजा।
आवत जाता अगम समावै, ताको त्रिभुवन सूझा ।।४
कहै पानप सुनो भाई साधो, यह विधि काहसूं कहिये।
सांच कहे यह सब जग खीजे, समझ चुपही रहिये ।।५

काया सोध

गंगा जमुना और सरस्वती, बरसे झिलमिल धारा ।
बिना नयन कोई कोई परखे, रूप अरूप अपारा ॥१
निकट नाक सुध सूधी लाई, सुरत भई पटरानी ।
सज्जा मिली बहुत सुख देखी, तब बहती थीर ठहरानी ॥२
साधो सब सुरत के खेल, सुरत बिना नहीं पावे ।
दीपक बले तेल बिन बाती, जब मन में सुरत समावे ॥३
धुन उपजी मन से मन खोजा, धुन में रहा समाई ।
वह धुन लागी बहुत प्यारी, पलक न बिसरी जाई ॥४
पांच पचीस सुन्न में सिमटी, लगी ब्रह्म की पूजा ।
काया सोध वो तत्व पाया, सब घट एक ही सूझा ॥५
भवंर गुफा में आसन मांडा, मनसा मंडप ताना ।
धुनी ध्यान तपे मन तामें, तब सीतल भये प्राण ॥६
सीतल भया मिटी जब तपता, मूल मन्त्र आराधूं ।
सुमरन करूं बिना ही रसना, सुखमन पिंगल साधूं ॥७
हर-हर रटन रैन दिन लागी, बिसरे ते मर जाऊँ ।
काया सोधत आत्म सूझा, घट में दरसन पाऊँ ॥८
योग युक्ति का अधर सिंघासन, अलख पुरुष की पूजा ।
भ्रम बिलाया[1] घट में पाया, एक और नहीं दूजा ॥९

१ = नाश करना ।

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी ।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ॥
नमोः संत सतगुरु जिन्हीं तत्व चीन्हा ।
नमोः दास पार्षद जिन्हीं तत्व चीन्हा ॥
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फलपायंतं ।
श्री गुरु के चरणारविंदं नमस्कारं-नमस्कारं ॥

• इति ब्रह्म-विद्या नवं वाणी •

ॐ

।। श्री परमात्मने नमः ।।

-।।- श्री स्वामी मगनीराम जी सहाय, श्री स्वामी पानपदेव जी सहाय -।।-

सर्व संतों की दया

ब्रह्म-विद्या दशम् वाणी

दर्शन

अपनी आत्मा का साक्षात्कार ही सच्चा दर्शन है, अपने से बाहर और सब भ्रम है। देहधारी राम व कृष्ण को परमात्मा मानकर उनकी पूजा में लगा रहना भूल है क्यों कि:—

"सो जल बल मृतक हो गया, जन्म मरा जग में नहीं रहा।
रूप अरूपी राम हमारा, व्याप रह्यो घट सबै मझारा ।।

भगवान राम व कृष्ण के चरित्र कवियों की कल्पनाओं की सुन्दर व ऊंची उड़ान है, जिनको मूर्ति में प्रविष्ट किया गया है। इन आदर्श गुणों का अनुकरण करके मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है; न कि केवल मूर्ति पर फूल, चन्दन, धूप, चढ़ाकर। सगुण उपासना में साधक आंख से रूप देखता है, कान से कीर्तन सुनता है, पांव से तीर्थ जाता है, हाथ से पूजा करता है इस तरह सब इन्द्रियों को काम में लगाकर चित्त को एकाग्र करता है पर यह सेवा पूजा साधन हैं; इनको साध्य मान कर बैठ जाना भूल है।

संत चींटी से लेकर सूर्य तक सर्वत्र परमात्मा को देखते हैं सागर में विलासता, गो माता में वात्सल्य, पृथ्वी में क्षमता आकाश में निर्मलता, चांद तारों में तेज, फूलों में कोमलता, इस प्रकार परमात्मा को सब में रमा देखकर समस्त सृष्टी से आत्मीयता प्रतीत करते हैं और सुरत योग द्वारा अपने अन्तर में आत्म दर्शन का आनन्द पाते रहते है। फिर उनको बाह्य उपचार आवश्यक नहीं लगतेः—

कहै पानप दर्शन सही, जो आतमराम पहचाने।
जिन सतगुरु सूं आत्म जाना, भ्रम की कही न माने ।।

यह आत्म-राम सबके अन्तर में व्याप्त है, मन व बुद्धि को प्रकाश दे रहा है, इन्द्रियों में शक्ति उत्पन्न कर रहा है। वह मन का मन है प्राणों का प्राण है परन्तु माया के कारण जीव भ्रम में पड़ा है। इस माया रूपी अविद्या के नष्ट हो जाने पर ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त हो जाता है यही दर्शन है।

शबदी

दरसन करना कठिन है, कहन सुनन आसान ।
कहै पानप दरसन तब लहै, पहले लगावे जान ।।१
दरसन को पहचाना ना, तो बानी को क्या पावेगा ।
चंचल स्थिर परखा ना, तो भरम साथ बह जावेगा ।।२
दरसन को पहचाना ना, तो दरसन किसका किया ।
कहै पानप आत्म चीन्हा ना, तो भरम ने धोका दिया ।।३
दरसन बिन जीऊँ नहीं, मेरा दरस अधार ।
कहै पानप तब दरसन पाया, आतम सुरत विचार ।।४
कहै पानप सुमरन क्या किया, हरि दर्शन हुआ नाहि ।
पल पल में हरि दरसन होवे, जो सुमरे सुरत मन माहि ।।५
निकट न खोजे दूर हरि जाना, कहो दर्शन कहां पावे ।
कहै पानप जब सतगुरु भेंटे, आत्म प्रगट लखावे ।।६
हरि सब ही सूं मिल रहा, हरि सूं मिले ना कोय ।
सुरत बांध हरिसूं मिले, कहै पानप हरि का होय ।।७
हरि दरसन जो किया चाहे, तो अपना दरसन खोज ।
कहै पानप अकल विचार के, आत्म-तत्व को सोध ।।८
अटक रहा अटकाव में, छुटा नहीं भटकाव ।
जो चाहे हरि दरस को, निर्भय होके आव ।।९
गली कूंचे की राम राम, जेसी मारी फेंट ।
अंतर हरि सुमरा नहीं, सका न हरि सूँ भेंट ।।१०
हरि को सुमरे सुर्त सूं, अन्तर माहीं पैठ ।
पानप कहै बात यो सांची, तुरत राम सूँ भेट ।।११

साहब रूप अरूप है, जिसके अनगिन रूप ।
नहीं उजाला आग का नहीं चन्द और सूर ॥१२
अगम निरन्तर अजब तमासा, झिलमिल झिलमिल होय ।
कहै पानप ताही को सूझे, सुरत लगावे सोय ॥१३
जब सूं लगा तब हीं सूं प्रगट, दिन दिन अधिक तमासा ।
मनसा अगम विलमनी[1] पानप, चहूं दिस में उजासा ॥१४
चहूँ दिस में उजासा देखा, पांचो घेर बसाया ।
गगन मंडल में पल एक ठहरे, अनहद नाद सुनन में आया ॥१५
अनहद बाजे गगन में, दूजा सुने न कोय ।
कहै पानप सोई सुने, सुरत लगाइ होय ॥१६
गगन मंड़ल में अनहद घुरें, सुनत रहूं दिन रैन ।
अंतर सुरत रही रच पानप, लेह सतगुरु की सैन ॥१७
बंसी बाजे गगन में, जहां तंत मिल पांच ।
कहै पानप यो मुक्ति है, वस्तु सीख लो सांच ॥१८
हरि दर्शन की महिमा पानप, मो पे कही न जाई ।
अनगिन रूप तमाशे अनगिन, अगम महल के माहीं ॥५६
सतगुरु की हरि-दर्शन की, यो मेरे प्रतीति ।
कहै पानप सुनो भाई साधो, मैं तजी जगत की रीति ॥२०

चरण:—हरि चरणों में चैन है, जो कोई लिया चाहै ।
सकल निरन्नर पानपा, सुरत लगाय पावे ॥१
सदा बिलावल[2] साधके, चरणों पाई ठौड़ ।
कहै पानप अंतर बसे, यो मन राखा मोड़ ॥२
चरणों राचा सोइ मन स्थिर, और सब मन बहका जान ।
चरणों रचा चले नहीं एक पल, सो मन थीर प्रमान ॥३
ते जन बिरले जगत में, चरणों आठ-पहर लव-लीन ।
सतगूरु गमसूं पानपा, आतम पायो चीन्ह ॥४

१=बिलमना, प्रेम में फंसना २=प्रेमिका, सुरत

बसंत

काया बन मौलि[1] बसंत, फूल लगे बहु रंग ।
कहै पानप वह दरस है, पाया प्रभु को संग ॥१
कहा रंग को देखे, देख ले रंगरेज़ ।
कहै पानप निरखो सुरतसूं सुन्न, मंडल में सेज ॥२
खेलत बसन्त जहां भक्ति रूप, प्रगट रही मूरत अनूप ॥टेक
वा मूरत के नहीं रूप रेख, वा मूरत में सूरत अनेक ।
सूरत मूरत कोई नांहि, जगमग उज्यारे जगमगांहि ॥१
बिन केसर बिन अगर भुलाल, रँग बिना रंग अजब ख्याला ।
छूटे पिचकारी अग्रह फुहार, जहाँ संत मढ़े हरदम सुमार[4] ॥२
ऐसे होरी खेलें हरके लोग, गाय सुनावें भक्ति-योग ।
कहै पानप नीचसूँ नीच, यो खेल देह प्रभु माँगू भीख ॥३

२

नैनन में छाय मधुर श्याम, धर मनसा दरसन अष्ट-जाम ॥टेक
जहां खिड़की लागी तिल परिमाण[1], कोई संचे[2] सुरत हरजन सुजान ।
आप आपमें लियो जोह[3], जित कित पलपल हर दरस होय ॥१
जहां पात न बेली[5] बिरछ नाहि, मानो पहुप बरसें दस दिसाई ।
थकित भयो मन जिन्ह देख, वो तो पहुप नहीं दर्शन अलेख ॥२
हरिके गुन गावन की मोहि अधिक चाह, मेरी बुद्धि-हीन नहीं सके गाय
मगन रहूँ हरि गुन के माहि, मैं तो देस गुणन के बसूं नाहि ॥३
हर हर धुन लागी मन माहि, मुख जिभ्या से कहना नाहि ।
चढ़े पवन गगन बाजे अनहदनाद, कोई त्रिवेनी-तट सुने साध ॥४
हरि सर्वको सब में रहा समाई, भेख ग्रह कोई हरिको नाहि ।
हरजन हरिचर्णों रहे लौलीन, कहै पानप प्रभु को पायो चीन्ह ॥५

१=माप, २=बटोरे, ३=देख ढूढना, ४=चुनकर, ५=वृक्ष, ६=खिलना

राग रामकली

भाग बड़े कुछ संभल भी तो, हरि जी हरि मन्दिर आय हैं।
जन्म सुकारथ करलीनो, जिन हरि मन्दिर पाय हैं ॥टेक
रूप रेख बिन वर्ण भेष बिन, अगम अगोचर छाय हैं ॥१
करन करावन सर्व निवासी, आत्मराम कहाय हैं ॥२
प्रगट रहैं दूर नहीं एक पल, मेरे सतगुरु ने बतलाय हैं ॥३
हरिजन दरसन खोज सही किया, दरसन मध्य समाय हैं ॥४
कहै पानप ताका गमन विनासा, सुरत निरत ले धाय हैं ॥५

नाम लीला

दोहाः—राम खुदा वही अलख है, दुबधा है दोऊ नाम।
अलख दर्श जिन पाया, कहै पानप तापे बलि जाऊं ॥
ऐसा जन बिरला जग माहि, अलख दर्श बिन जीवे नाहि।
सब जग कृष्ण दर्शन को चाहजे, जाके मस्तक मुकट बिराजे ॥१
कुंडल कान बैजंती माला, ऐसो है हमरो गोपाला।
बहु नाचै मुख मुरली सोहे, मदन रूप काम मन मोहे ॥२
ग्वाल बाल संग क्रीड़ा करे, सहस्त्र गोपियन के वह मन हरे
जग कहे ऐसा कृष्ण हमारा, वा सम और नहीं करतारा ॥३
सो जल बल[५] मृतक हो गया, जन्म धरा जग में नहीं रहा।
रूप अरूपी राम हमारा, व्याप रहो घट सबै मझारा[३] ॥४
दोहाः—घट खोजो नर बावरे, तामें अलख अपार।
पानप पाया सतगुरु सेती, त्रिकुटी संघ मझार ॥१

३=मध्य ५=जल-भुन।

अरिल्ल

जो जन चीन्हे आत्मा, सांचा दरसन सोय ।
पानप सेवो आत्मा, तो तुरत मुक्ति फल होय ॥१
तुर्त मुक्ति फल होय, लोय[3] ताहि निर्मल सूझे ।
मन को करले थीर, संत वा पद को बूझे ॥२
पल पल सेवे सुरतसूं, भरम करे सब दूर ।
कहै पानप वा संत को, दरसन सदा हजूर ॥३

२

बिन ही आग मसाल[1] सी, सूझत बलंत अनन्त ।
कहै पानप अंतर अकलसूं, कोई निरखे हरि के संत ॥१
यो तत्व निरखा अकलसूं, भया कुटुम्ब का नास ।
पांच पचीसों मर गये पानप, तब नारी भई उदास ॥२
नारी भई उदास, थकित होय घर में बैठी ।
सुन मंडल की सेज जहां, जाय निस-दिन लेटी ॥३
सदा उजाला रहत है, कभी न होय अंधेर ।
पानपदास कहै गुरु-गमसूं, टुक[2] सुख-मन को फेर ॥४

३

सोहं सोहं स्वांसा कहे, शब्द अनाहद कोई न लहे ॥१
सोहं ऊपर अलख मुकाम, संतो परस पाया बिसराम ॥२
सोहं चाल सुने सोइ कहै, सोहं चाल कोइ बिरला लहै ॥३
सोहं ऊपर आप बिराजे, कोइ बिरला जाय अधर के छाजे ॥४
पानप सतगुरु सेती पाया, सुरत पकड़ के तहां समाया ॥५

१=मशाल २=तनिक ३=नेत्र

राग सोरठा

ऐसा अचरज प्रगट हुआ, देखत जन जीवत मुआ ।।टेक।।
बिन कर तूर झालरसी[3] बाजें, बिन ही मेघ गगन धुन गाजें ।।१
बिन ही आग दिवे बिन बाती, निर्मल ज्योति बले[9] दिन राती ।।२
उपजे स्वाति सीप बिन मोती, होवे हंस काग तज गोती ।।३
मन मनसा उलट समावे, सो तन छीन होन नहीं पावे ।
लख लख जन पानप गावे, लख पावे सो जोन[4] न आवे ।।५

२

बाजे बाजें बांसुरी हो भीनी, भीनी भीनी मधुर सी टेर ।
दूर न जानो भाई साधुवा, तू तनिक सुखमना फेर ।।टेक
मीन भंढे[8] तिहूँ लोक में रे, पर्वत ज़िकर[5] लगाव ।
गंगा जल फैला फिरे, तू उलट सुमेर चढ़ाव ।।१
दो पर्वत की संघ में रे, यह गुण होय बिलम्भ[6] ।
अगम अगोचर खोज ले, जहां गगन खड़ा बिन खम्भ ।।२
गगन मंडल में सिन्धु है रे, हंसा जहां केलि[7] करे रे ।
कहै पानप उन हंस के, मैं बार बार बलि जाऊँ रे ।।३

३

ऐसी बान पड़ी हो नेना, ऐसी बान पड़ी हो ।।टेक।।
आठ पहर दर्शन में रहना, बिछड़े न एक घड़ी हो ।
वा दर्श को प्रगट परचा, गमन[9] दिष्टि[10] ठहरी हो ।।१
जुग के मिले माधुरी प्रगटी, हृदय में रहत अड़ी हो ।
कहै पानप उरझे थे या जगसूं, गुरु मिल सब निबड़ी हो ।।२

३=घड़ियाला ४=जोनि, जन्म, ५=याद, स्मरण ६=रुकना, ७=क्रीड़ा
८=भ्रष्ट, डूबना, ९=चलती, १०=दृष्टि

राग रमैनी

मेरे साहिब ऐसोरे भाई, आपा जगको रहो दिखाई ।
मेरे साहिब को कोई न देखे, यह सब जग पेखने[1] पेखे[2] ।।टेक
खेल खिलौने जन्म गवांया, मेरे हरिका मर्म न पाया ।
हरिका मरम लहे जो कोई, ताको यमकी त्रास न होई ।।१
हरका मरम संत कोई पावे, जाको सतगुरु भेद बतावे ।
अगम अगोचर देखन माहि, देखे अकलसूं सूझे ताहि ।।२
रूप अरूप कह्यो नहीं जाई, सकल निरंतर रह्यो समाई ।
उलटी दृष्टि देखे जो कोई, पल पल में ताहि दर्शन होई ।।३
अचरज देख पानप जन कहै, ताकी बोली कोई न लहै ।
जो कोई लहे सोई सुरज्ञाना, साधे साधना लहे स्थिर थाना ।।४

राग सूही

अनहद शब्द अनन्त धुन बाजें, महिमा कही न जाई राम ।
उर्ध सुमरन होय सुरतसूं, राम नाम लौ लाई राम ।।टेक
चढ़ गई पवन गगन में सनमुख, उपजी अनहद बानी राम ।
सुनत सुनत लव-लीन भई, तब स्थिर ठहरानी राम ।।१
भेर नगारे बंसी मुरली, बीन सुहंगम[3] बाजें राम ।
ताल मृदंग झांझ ढ़प ढोलक, सुन कान बिना बेन साजे राम ।।२
ध्यान धरत यो अचरज प्रगटो, बरसें रिमझिम मोती राम,
आंख खोलके जित कित देखा, पलक छीन ना होती राम ।।३
कहै पानप सब खेल अकल के, जो चरनों में पागे राम ।
त्रिवेनी तट मस्तक चरणा, तो विष्य–मद न लागै राम ।।४

१=तमाशा दृश्य, २=देखे, ३=सुगमता ।

फ़ारसी

दिल तहकीक करे अपना, दिल में दिल दरावे ।
माला तसबीह छूट जाय, तब दीद नूर का पावे ॥
तसबीह रूह करे दिल दाना, हरदम फेरे ताहि ।
कहै पानप क्याफे में देखे, अल्लाह दीखे ताहि ॥
आशिक[1] चश्म चश्म महबूबा[2], चश्म[3] में रूह पहचाना ।
खालिक का दीदार[4] वही है, पानप गुफ़त[5] दीवाना ॥

राग नट

नैना उरझ रहे दरसन में, उरझ रहे अब सुलझत नाहि ।
कर अकरन कषर्ण[6] में ।टेक
जा दर्शन को मैं बन बन हांडी, सोई दरसन नैनन में ।
आपा उलट निरख लियो आपा, सब संजम मेरे मन में ।।१
मैं दरसूं, दरसन है मेरा, दूजा नहीं और तन में ।
अजपा जाप महा सुख उपजे, सुरत धरे छिन-छिन[7] में ।।२
बाती, तेल, दिवे बिन ज्योती, झलकत रहत गगन में ।
त्रिकुटी मध्य गुरु लखाया, पानप रहत जतन में ।।३

२

गगन धुन हो लागी रहत, गगन धुन हो ॥ टेक ॥
तनका तंबूरा, सुरत के तार, तीन गुणन की लागी है ज्वार[8] ।।१
मन का मोरना[9] जतनसूं संवार[10], अगम महल में तत झंकार।२
पांच पचीस मिल खेलें खेल, अपने पिया के संग रसरंग मेल ३।।
कहै पानप गुरू-गम का खेल, दीपक बले बिन बाती बिन तेल ।।४

१=प्रेमी, २=प्रेमिका, ३=नेत्र ४=दर्शन, ५=कहता है ६=आकर्षण, खिंचाव
७=पल पल ८=उतार चढ़ाव ९=मोड़ना, १०=ठीक करना ।

कड़के

अजब झंकार ब्रह्मन्ड़ झंकत रहे, सिफ्त न करसकूं अकल हीनी।
अष्ट-याम अनहद घुरते रहें, एक ना छिनक कभी होत छीनी ।।१
शब्द मुरशद दिया प्रेम प्याला पिया, भया मन मस्त तन गस्त दीनी।
पांच पचींस का मूल एक पवन है, बांध सत-संध घर रमन कीनी ।।२
सुखमना पिंगला गावें गुण-मंगला, प्रगटे प्रेम तिस रंग भीनी।
खलककी पलकमें अलख निज ही रहे, खोल दिलद्वार जिन दर्श कीनी ।।३
नाभ की नालमें ख्याल एक अजब है, दंड सूधा किए वस्तु चीन्ही।
दास पानप कहै द्वार दसवें रहे, जीवते मुक्त लहे सिफ्त कीनी ।।४

२

ऐजी अटक मन अटक मन गंग घरमें बहे, योगी-युक्ता मिले युगत पावै।
भ्रम की जेवड़ी बांट जग मर गया, तत्व का मथन नहीं हाथ आवै।।१
झिरे अमृत कनी पीव तजकर मनी, होय मन मग्न तन अमल[१] छावै।
रामके रंग में रंग राचा रहे, अचल होय मन नहीं चलन पावै ।।२
मीन उस धार सुमेरु दम[२] के चढ़ै, तजे जल-बास गिरवर सुहावै।
गगन की गुफा में अजब एक जोगया, रूप बिन रेख बिन दृष्टि आवै।।३
मेरकू फेर मुमरे ऊपर धरे, खुले दल अष्ठ जब दर्श पावै।
दास पानप कहै शब्द-धुन रच रहै, सुरत फेर उस घर समावैं ।।४

१=निर्मल २=तीव्रता से,

नमोः देव देवं नमोः ब्रह्म ज्ञानी।
नमोः सेव सेवं नमोः तत्व ज्ञानी ।।
नमोः संत सतगुरु जिन्हों तत्व चीन्हा।
नमोः दास पानप जिन्हों तत्व चीन्हा ।।
ॐ लिखंतं पढंतं सुनंतं शब्द विचार करंतं, मुक्ति फलपायंतं।
श्री गुरु के चरणारवंदं नमस्कारं-नमस्कारं ।।

* इति ब्रह्म-विद्या दसम् बाणी *